1. सिंधु घाटी सभ्यता

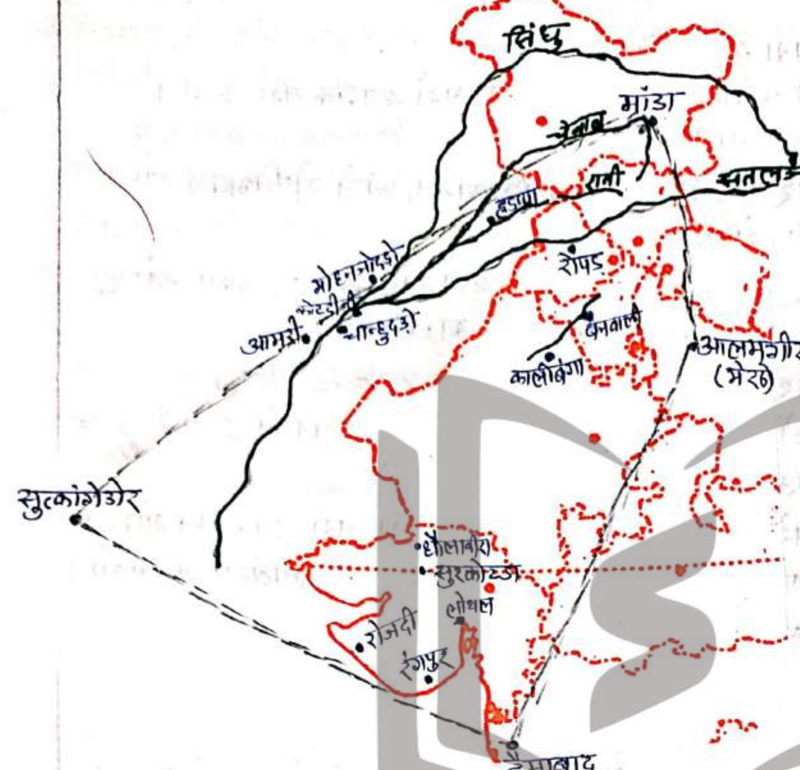

- ✓* विस्तार : मांडा (JK) से दैमाबाद (महाराष्ट्र) व सुत्कांगेडोर (पाक.) से आलमगीरपुर (UP)
- ✓* समूचा क्षेत्र त्रिभुजाकार : क्षेत्रफल = 1299600 वर्ग किमी । जो वर्तमान पाकिस्तान व मिश्र तथा मेसोपोटामिया ( ) से बड़ा है।
- ✓* ताम्रपाषाणिक कांस्य युगीन सभ्यता ।
- ✓* सर्वप्रथम खोज 1921 को हड़प्पा क्षेत्र की हुई अतः इसे हड़प्पा संस्कृति कहते हैं।
- ✓* जॉन मार्शल द्वारा सिंधु नदी के कारण नाम 'सिंधु सभ्यता' रखा ।
- ✓* सभ्यता का केन्द्रीय स्थल पंजाब व सिंध (पाक.) मे सिंधु घाटी क्षेत्र ।
- ✓* क्षेत्र: गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, प. उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर व पाकिस्तान
- ✓* अब तक 1500 से अधिक स्थलों का पता लगा है। स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक क्षेत्र: गुजरात मे।
- ✓* प्रमुख शहर केवल 7 थे : हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चान्हुदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनवाली, धौलावीरा ।
- * कालीबंगा व बनवाली मे दो सांस्कृतिक अवस्थाएं पायी गई - हड़प्पा-पूर्व व हड़प्पाकालीन ।
- * समुद्रतटीय नगर - सुत्कांगेडोर व सुरकोटडा मे नगर-दुर्ग होना मुख्य विशेषता है। इसके अलावा धौलावीरा मे भी किला है।
- * धौलावीरा व राखीगढ़ी मे हड़प्पा संस्कृति की तीनो अवस्थाएं मिलती है।
- ✓* कालक्रम रेडियोकार्बन C^{14} पद्धति से :- 2400 ई.पू. से 1700 ई.पू. (प्राक्ऐतिहासिक/कांस्य युग)
- ✓* सिंधु सभ्यता की खोज - रायबहादुर दयाराम साहनी द्वारा ।
- ✓* इस सभ्यता के निवासी द्रविड़ एवं भूमध्यसागरीय थे।

3/5 | 3/6

SHREERAM CLASSES

नगर-योजना :

* हड़प्पा संस्कृति की मुख्य विशेषता नगर-योजना थी।
* हड़प्पा व मोहनजोदड़ो दोनो नगरों के अपने अपने दुर्ग थे। जहाँ शासक वर्ग रहता।
* नगरीय भवन जाल (ग्रिड) की तरह व्यवस्थित थे।
* सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती जिनमे नगर अनेक खंडों मे विभक्त था।
* बड़े-बड़े भवन - हड़प्पा व मोहनजोदड़ो
* मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार (11.88 X 7 मीटर व 2.43 मी. गहरा), दोनो ओर तल से सीढ़ियां, बगल मे कमरे, बड़ा कुआँ। पक्की ईंटों का निर्माण।
* मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत - अन्नागार (45.7 X 15.2 मीटर)
* सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र मे पक्की ईंटों का इस्तेमाल केवल हड़प्पा सभ्यता में हुआ है। इसके समकालीन सभ्यता मिस्र व मेसोपोटामिया से भी अधिक।
* अदभुत जल निकास प्रणाली - घरों का पानी सड़कों पर आता जहां इनके नीचे मोरियां बनी हुई थी। जो अक्सर सिल्लियों से ढकी रहती। मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, बनवाली।
* सफाई व स्वास्थ्य पर सर्वाधिक ध्यान दिया।

कृषि :

* प्राचीनकाल मे यह क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ था, क्योंकि सिंधु नदी द्वारा प्रतिवर्ष बाढ़ से उपजाऊ मिट्टी लाती। प्राकृतिक वनस्पति सम्पदा अधिक थी जिससे वर्षा अधिक होती। इन वनों का इस्तेमाल ईंटे पकाने व इमारत बनाने मे होता।
* गांव की रक्षा हेतु बाढ़ से बचाव के लिए पक्की ईंट की दीवारें।
* बाढ़ उतरने के बाद नवंबर मे बाढ़ मैदानों मे बीज बो देते व अगली बाढ़ आने से पहले अप्रैल मे गेहूँ व जौ की फसल काट लेते। कालीबंगा से खेत जुताई के अवशेष मिले हैं।
* गबरबंदों/नालों को घेरकर जलाशय बनाने की परिपाटी बलूचिस्तान व अफगानिस्तान मे रही। लेकिन नहरों व नालों के अवशेष नहीं।
* खाद्यान्न: गेहूं, जौ, राई, मटर, आदि का उत्पादन। तिल व सरसों भी। लोथल मे चावल पैदा होता।
* खाद्यान्न भण्डारण - मोहनजोदड़ो, हड़प्पा व कालीबंगा के बड़े-बड़े अन्नकोठारों में।
* किसानो से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता।
* सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु वासियों को मिलता है। इसलिए यूनानी इसे 'सिंडन' कहने लगे, जो सिंधु शब्द से निकला है।

पशुपालन

* गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर आदि पालते। कुत्ता, बिल्ली, गधे, ऊंट भी रखते।
* सबसे प्रिय पशु - कूबड़ वाला साँड। * हाथी व गैंडे का भी ज्ञान था।
* घोड़े के अवशेष गुजरात के सुरकोटडा से मिले हैं तथा लोथल से घोड़े वाली मूर्तिका।
* लेकिन हड़पाई संस्कृति अश्व केन्द्रित नहीं थी।

शिल्प और तकनीकी ज्ञान :

* हड़प्पा संस्कृति काँस्य युग की है अतः कांसे के औजार व उपकरणों से परिचित थे लेकिन सर्वाधिक पत्थरों के औजारों का उपयोग करते।
* कांसा (तांबे मे टिन मिलाकर) के सीमित औजार मिलते हैं। खेतड़ी (राज.) से तांबा तथा अफगानिस्तान से टिन मंगाया जाता व कुल्हाड़ी, आरी, छुरा व बरछा बनाते।
* कपड़े का अवशेष → मोहनजोदड़ो से सूती बुना हुआ कपड़ा निकला है।
* सूत कताई की तकलियां, जिससे ऊनी व सूती वस्त्रों हेतु कताई होती।
* स्थापत्य शिल्प → विशाल इमारतें
* नाव निर्माण, मिट्टी की मुहरें, मिट्टी की पुतलियां, स्वर्ण-चांदी के आभूषण निर्माण होता।
* सोना व चाँदी → अफगानिस्तान से लाते। रत्न → दक्षिण भारत से।
* मनका निर्माण, चाक पर मृदभांड बनाते जो चिकने व चमकीले होते।
* टेराकोटा (आग मे पकी) मिट्टी की मूर्तियां, खिलौने, मुहरें

व्यापार :

* विस्तृत व्यापार की पुष्टि - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो व लोथल से प्राप्त मिट्टी की मुहरें, लिपि, व माप-तौल के अस्तित्व से तथा विशाल अन्न भण्डारों से।
* धातु के सिक्के नहीं मिले। समस्त आंतरिक व्यापार वस्तु-विनिमय द्वारा करते इसमे पत्थर, धातु, हड्डी आदि व्यापार होता। अनाज के बदले धातु लाते (गाड़ियों से)
* व्यापारिक संबंध → राजस्थान, अफगानिस्तान, ईरान, मध्य एशिया मे दजला-फरात प्रदेश, मेसोपोटामियां (इराक, सीरिया), मिस्र
* मेसोपोटामियां अभिलेखों मे 'मेलुहा' के साथ व्यापारिक संबंधों की चर्चा है। मेलुहा सिंधु प्रदेश का प्राचीन नाम है।
* 'लोथल' से फारस की मुहरें तथा कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें सिंधु सभ्यता के व्यापार को--
* विदेशी व्यापार सिंधु सभ्यता की समृद्धि का कारण था।
* आयातित वस्तुएं → टिन : अफगानिस्तान, ईरान (मध्य एशिया) सोना : अफगानिस्तान, कर्नाटक
  तांबा : खेतड़ी, बलूचिस्तान सेलखड़ी : राज. गुज. बलूचिस्तान
  चांदी : ईरान, अफगानिस्तान हरितमणि : द. भारत

राजनीतिक संगठन :

* राजनीतिक संगठन का स्पष्ट आभास नहीं, किंतु यहां की सांस्कृतिक एकता केन्द्रित सत्ता से ही संभव
* मौर्य साम्राज्य की स्थापना से पूर्व यह सबसे बड़ी राजनीतिक इकाई थी। जो 600 वर्षों तक रही
* शासकों का ध्यान साम्राज्य विजय पर कम व वाणिज्य की ओर अधिक था।
* अस्त्र-शस्त्रों का अभाव।
* शासन वणिक वर्ग के हाथ मे था।
* शासन प्रणाली जनतंत्रात्मक / लोकतांत्रिक थी

धार्मिक जीवन :

* मिस्र व मेसोपोटामिया सभ्यता के विपरीत यहाँ मंदिर व धार्मिक भवन नहीं मिले, लेकिन इसका अपवाद - विशाल स्नानागार।
* लोथल, कालीबंगा से अग्निपूजा अवशेष।
* हड़प्पा से मिट्टी की स्त्री-मूर्तिकाएं भारी संख्या मे मिली जहां एक मूर्ति मे स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा (उर्वरता की देवी)।
* उर्वरता की देवी के समान मिस्र मे आइसिस देवी की पूजा की जाती।
* पुरुष देवता - एक मुहर पर योगी ध्यान मुद्रा मे पद्मासन लगाए दिखाया गया है। उसके चारों ओर एक हाथी, एक बाघ, व एक गेंडा है। तथा आसन के नीचे भैंसा है। यह चित्र पशुपति महादेव का बताया जाता है।
* शिवलिंग पूजा के प्रतीक मिले हैं।
* वृक्षों की पूजा - एक मुहर पर पीपल की डालों के बीच देवता विराजमान है।
* पशुपूजा - मुहरों पर एक सींग वाला जानवर (यूनीकॉर्न) या गेंडा
* बड़ी तादाद मे ताबीज प्राप्ति - जादू-टोना, तंत्र-मंत्र मे विश्वास
* स्वास्तिक, चक्र, क्रॉस के प्रतीक प्राप्ति। स्वास्तिक व चक्र सूर्य पूजा का प्रतीक है।

हड़पाई लिपि :

* हड़प्पा लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 को मिला व 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश मे आ गई, किंतु अब तक यह पढ़ी नहीं जा सकी।
* पत्थर की मुहरों व अन्य वस्तुओं पर हड़पाई लेखन के 4000 नमूने हैं। छोटे-छोटे लेख हैं जिनपर 2-4 ही शब्द हैं। मिस्र व मेसोपोटामियाई लिपि के लेख लंबे-2 हैं।
* इस लिपि मे 250 से 400 तक चित्राक्षर (पिक्टोग्राफ) हैं और चित्र के रूप मे लिखा हर किसी ध्वनि, भाव या वस्तु का सूचक है। यह लिपि वर्णात्मक नहीं चित्रात्मक है। (भावचित्रात्मक)
* यह लिपि अन्य सभ्यताओं की लिपियों से मेल नहीं खाती, अतः यह सिंधु प्रदेश का आविष्कार है।

माप-तौल व बाट :

* तौल मे 16 या उसके आवर्तकों का व्यवहार होता था, जैसे = 16, 64, 160, 320, 640 आदि
* यह सोलह के अनुपात की परम्परा भारत मे आधुनिक काल तक चलती रही है। एक रुपया = 16 आना
* मापने के डंडे भी पाए गए हैं जिनपर माप के निशान लगे हैं। इनमे एक डंडा कांसे का भी है। स्केल

मुहरें (सीलें) :

* हड़प्पा सभ्यता की सर्वोत्तम कलाकृतियां है, यहां की मुहरें। जो अब तक 2000 से अधिक प्राप्त हो चुकी हैं। अधिकांश (500) मुहरें मोहनजोदड़ो से (जैसे कूबड़ वाले बैल चित्र की मुहर)
* अधिकांश सीलों पर लघु लेखों के साथ-साथ एकसिंगी जानवर, भैंस, बाघ, बकरी व हाथी के चित्र हैं।
* मुहरें सेलखड़ी (steatite) की बनी है। लोथल व देसलपुर से तांबे की मुहरें मिली है।
* सर्वाधिक मुहरें वर्गाकार थी। * मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा से राजमुद्रांक भी मिले हैं (Sealings)

SHREERAM CLASSES

प्रतिमाएँ :

* हड़प्पाई शिल्पी धातु की सुंदर मूर्तियाँ बनाते थे। काँसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। यह पूरी मूर्ति गले मे पड़े हार के अलावा नग्न है (मोहनजोदड़ो से प्राप्त)।
* कुछ प्रस्तर प्रतिमाएं भी मिली है, लेकिन प्रस्तर शिल्प मे हड़प्पा संस्कृति पिछड़ी हुई है।
* सेलखड़ी की एक मूर्ति के बाए कंधे व दाए हाथ के नीचे अलंकृत वस्त्र तथा संवारे हुए बाल

मृण्मूर्तिकाएं (टेराकोटा फिगरिन) :

* आग मे पकी हुई मिट्टी की मूर्तियां टेराकोटा कहलाती है, भारी संख्या मे मिली है। इनका खिलौने या पूज्य प्रतिमाओं के रूप मे होता था। (पक्षी, कुत्ते, भेड़, गाय, बैल, बंदर, स्त्री, पुरूषों)
* नारी मृण्मूर्तियां पुरूषों से अधिक पायी है।

सामाजिक व्यवस्था :

* हड़प्पा समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था। जो पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे व व श्रमिकों मे विभाजित था।
* समाज युद्धप्रिय कम व शांतिप्रिय अधिक था। * पर्दाप्रथा व वैश्यावृत्ति प्रचलित
* खान-पान : शाकाहारी व मांसाहारी दोनो।
* वस्त्र : सूती व ऊनी। आभूषण : पुरूष व स्त्री दोनो।
* मनोरंजन : खेल, नृत्य, शिकार, पशु-लड़ाई। धार्मिक उत्सव व समारोह।
* शवों की अंत्येष्टि संस्कार : पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण व दाहसंस्कार

हड़प्पा संस्कृति की नागरिकोत्तर अवस्था :

* हड़प्पा संस्कृति 1900 ई.पू. तक रही, इसके बाद नगर धीरे-धीरे लुप्त हो गए।
* इसके लक्षण पाकिस्तान, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., कश्मीर, मे मिलते हैं।
* कार्यकाल : 1900 से 1200 ई.पू.। इसे उपसिंधु संस्कृति भी कहते हैं।
* यह मूलतः ताम्रपाषाणिक है जिसमे पत्थर व तांबे के औजारों का उपयोग हुआ है।
* यह ग्रामीण सभ्यता थी जहां लोग कृषि, पशुपालन व शिकार करते। (जैसे - स्वात घाटी)
* वे मंद-चाल वाले-चाक पर बने काला-धूसर ओपदार मृदभांडों का इस्तेमाल करते।
* स्वात घाटी के निवासी चाक पर लाल पर काले रंग वाले मृदभांड तैयार करते जो आरंभिक नागरिकोत्तर मृदभांडो के निकट संबंध थे।
* उत्तर-हड़प्पा-पात्र : भगवानपुरा के चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)

सिंधु सभ्यता विलुप्ति के कारण :

* बाह्य आक्रमण
* भूतात्विक परिवर्तन
* जलवायु परिवर्तन
* विदेशी व्यापार मे गतिरोध
* साधनो का तीव्रता से उपभोग
* बाढ़ एवं अन्य प्राकृतिक आपदा
* प्रशासनिक शिथिलता

SHREERAM CLASSES

– हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल –

क्र.सं.	स्थल	स्थिति	नदी	उत्खननकर्ता	विशेषताएं
1.	हड़प्पा	मोंटगोमरी, पाक.	रावी के बांए तट पर	दयाराम साहनी, माधोस्वरूप वत्स (1921, 1926)	• विशाल अन्नागार, श्रमिक आवास, • स्त्री गर्भ से निकलता पौधा • चाँदी का सबसे प्राचीन साक्ष्य • सर्वाधिक मुहरें • भारत का प्रथम शहर
2.	मोहनजोदड़ो	लरकाना, सिंध (पाक)	सिंधु	राखलदास बनर्जी (1922)	• मृतकों का टीला • विशाल स्नानागार • कुषाणकालीन बौद्ध स्तूप • कांसे की नर्तकी मूर्ति • योगी/पुजारी • मुद्रा पर पशुपतिनाथ • घोड़े के दांत
3.	चान्हूदड़ो	सिंध प्रांत, पाक.	सिंधु	गोपाल मजूमदार (1931)	• हड़प्पा व प्राक् हड़प्पा दोनों के साक्ष्य • झूकर व झांकर संस्कृति • वक्राकार ईंटो का एकमात्र स्थल • मनका निर्माण उद्योग • बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पदचिन्ह
4.	कालीबंगा	हनुमानगढ़	घग्घर	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, बी.के. थापर (1952)	• काली चूड़ियां नाम • हवनकुंड, जुते खेत, अलंकृत ईंटे, बेलनाकार मुहरें, युगल समाधियां
5.	लोथल	अहमदाबाद (गुज.)	भोगवा	रंगनाथ राव (1957)	• बंदरगाह नगर, डॉकयार्ड/गोदीवाड़ा • फारसी मुद्रा, अग्निकुंड, पक्के रंग के पात्र चावल के प्रथम साक्ष्य, बाजरे का साक्ष्य घोड़े की लघु मृण्मूर्तियां, मृदभांड, चक्की • पंचतंत्र कहानी साक्ष्य: (चालाक लोमड़ी) चित्र
6.	बनवाली	हिसार (हरि.)	रंगोई	रविंद्र सिंह बिष्ट (1974)	• हल की खिलौना आकृति • तिल, सरसों का ढेर, मनके
7.	धौलावीरा	कच्छ (गुजरात)	—	रविंद्र सिंह बिष्ट (1990-91)	• वर्तमान भारत में खोजा गया दूसरा विशाल नगर (प्रथम: राखीगढ़ी) • प्राचीर युक्त क्षेत्र/मध्य नगर
8	सुरकोटडा	कच्छ (गुजरात)	—	जगपति जोशी (1964)	• घोड़े की अस्थियों वाला एकमात्र स्थल
9.	रंगपुर	काठियावाड़ (गुज.)	मादर	माधोस्वरूप वत्स (1931)	• धान की भूसी का ढेर, कच्ची ईंटों के दुर्ग
10.	कोटदीजी	खैरपुर, सिंध (पाक)	सिंधु	फजल अहमद (1953)	• बाणाग्र, कांस्य चूड़ियां, धातु उपकरण
11.	सुत्कांगेडोर	मकरान (पाक)	दाश्क	ऑरेल स्टाइन (1927)	• IVC का सबसे पश्चिमी क्षेत्र
12	रोपड़	पंजाब	सतलज	यज्ञदत्त शर्मा (1953)	• खुदाई में पांच क्रमिक संस्कृतियां • कब्र के नीचे कुत्ते का शवाधान वाला एकमात्र हड़प्पा स्थल (नवपाषाण में बुर्जहोम)

SHREERAM CLASSES

13.	आलमगीरपुर	मेरठ(UP)	हिण्डन नदी	यज्ञदत्त शर्मा (1958)	• सबसे पूर्वी स्थल
14.	माँडा	ज.कश्मीर	चिनाब नदी		• हड़प्पा क्षेत्र की सबसे उत्तरी बस्ती • मृदभांड, टेराकोटा
15.	दैमाबाद	अहमदनगर (महाराष्ट्र)	नर्मदा		• सबसे दक्षिणी क्षेत्र

अन्य प्रमुख तथ्य :

* विस्तार के आधार पर स्टुअर्ट पिगट ने हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ बताया ।
* मुहरों पर सर्वाधिक चित्र : एक सींग वाला बैल
* बंदरगाह नगर : लोथल, सुत्कांगेडोर, अल्लाहदीनो, बालाकोट, कुनतासी
* अफगानिस्तान मे हड़प्पा क्षेत्र : मुंडीगाक, सुर्तोगोई, देहमोरासी, घुंडई
* सर्वाधिक प्रचलित उपासना : मातृदेवी
* पूजनीय पशु : कूबड़ वाला सांड
* सैंधव वासी परिचित नहीं थे - तलवार, लौह, मंदिर, दालें

SHREERAM
CLASSES

सिंधु सभ्यता के मुख्य बिंदु

भूमिका
- विस्तार
- क्षेत्रफल
- खोज
- नाम
- प्रदेश
- कालक्रम

नगर योजना
- दुर्ग
- सड़कें
- जल-निकास
- स्नानागार
- अन्नागार
- पक्की ईंटें

कृषि
- उपजाऊ
- वनस्पति
- बाढ़
- खाद्यान्न
- राजस्व
- कपास

पशुपालन
- पालतू पशु
- प्रिय पशु
- घोड़े के साक्ष्य

शिल्प व तकनीक
- कॉस्य उपकरण
- सूती, ऊनी वस्त्र
- तकलियां
- विशाल इमारतें
- निर्माण उद्योग

व्यापार
- आंतरिक
- विदेशी
- संबंध
- लोथल
- आयात वस्तुएं

धर्म
- धार्मिक भवन
- अग्निपूजा
- उर्वरता देवी
- स्त्रीपूजा
- पुरुष देवता
- पशुपूजा
- सूर्यपूजा

लिपि
- खोज
- 4000 नमूने
- भावचित्रात्मक
- आविष्कार
- पढ़ी नहीं

माप-तौल
- 16 के आवर्तक
- माप स्केल

मुहरें
- सर्वाधिक
- कूबड़ सांड
- चित्र
- वर्गाकार
- सेलखड़ी
- फारसी

प्रतिमाएं
- नर्तकी
- सेलखड़ी
- मृण्मूर्तियां

समाज
- मातृसत्तात्मक
- शांतिप्रिय
- वाणिज्यिक
- खान-पान
- मनोरंजन
- वस्त्र
- अंत्येष्टि

पतन के कारण
- आक्रमण
- प्रा. आपदा
- जलवायु प.
- विदेशी व्या. x
- तीव्र उपभोग
- प्रशा. शिथिलता

प्रमुख स्थल
- हड़प्पा
- मो. जोदड़ो
- चान्हूदड़ो
- कालीबंगा
- लोथल
- बनवाली
- धौलावीरा
- रंगपुर

अन्य तथ्य
- सर्वा. चित्र
- बंदरगाह नगर
- पूजनीय पशु
- परिचित नहीं

SHREERAM
— CLASSES —

2. वैदिक सभ्यता 1500 – 1000 ई.पू.

आर्यों का मूल निवास - स्थान व पहचान (भौगोलिक विस्तार)

* आर्य एक नस्ल के नहीं थे। लेकिन उनकी प्रारंभिक संस्कृति समान थी।
* भाषा : हिन्द-यूरोपीय। जो आज इरान व भारतीय उपमहाद्वीप में बोली जाती है।
* मूल स्थान : यूरेशिया (आल्प्स पर्वत के पूर्वी क्षेत्र में)
* व्यवसाय : पशुचारण (कृषि का स्थान गौण)
* आर्यों के जीवन में घोड़े का स्थान सर्वाधिक महत्व का था। घोड़ों की तेज रफ्तार के कारण वे 2000 ई.पू. के बाद पश्चिमी एशिया में चढ़ाई करने में सफल हुए।
* मध्य एशिया व इरान होते हुए भारत आए। भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद में मिलती है जो हिन्द-यूरोपीय भाषाओं का सबसे पुराना ग्रंथ है। इसमें आर्य शब्द 36 बार.....।
* ऋग्वेद में अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियां संगृहीत है जिनकी रचना विभिन्न गोत्रों के ऋषियों ने की है।
* ऋग्वेद में 10 मंडल/भाग हैं जिनमें 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश है। प्रथम व 10वां मंडल सबसे बाद में जोड़े गए।
* 'अवेस्ता' इरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है जिसमें ऋग्वेद की अनेक बातें मिलती हैं
* हिन्द-यूरोपीय भाषा का सबसे पुराना नमूना इराक में 2200 ई.पू. में पाए अभिलेख में मिला लेकिन भारत में अब तक कोई अभिलेख नहीं मिला।
* भारत में आर्यों का आगमन 1500 ई.पू. के लगभग हुआ।
* ये लोग छेद वाली कुल्हाड़ियों, कांसे के कटारें और खड्गों का प्रयोग करते थे जो पश्चिमोत्तर भारत में मिले हैं। मध्य एशिया में घोड़ों के शवदाह प्रथा के साक्ष्य मिले हैं।
* सुवास्तु और गोमती नदियों (पाकिस्तान की स्वात घाटी व गोमल घाटी) का उल्लेख ऋग्वेद में है
* आरंभिक आर्यों का निवास पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान व भारत के पंजाब तथा हरियाणा में था।
* ऋग्वेद में अफगानिस्तान की कुंभा आदि नदियों तथा सिंधु व उसकी सहायक नदियों का उल्लेख है।
* सिंधु आर्यों की प्रमुख नदी है जिसका उल्लेख बार-बार किया है। दूसरी प्रमुख उल्लिखित नदी सरस्वती (वर्तमान घग्घर) है जिसे नदीतम (सर्वश्रेष्ठ नदी) कहा गया है।
* आर्य लोग ताँबा खेतड़ी से प्राप्त करते। जहां प्रथमत: आर्य लोग बसे वह सारा प्रदेश सप्तसिंधु (सात नदियों का देश) नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें अफगानिस्तान भी था।
* प्रथम खेप में आए ऋग्वैदिक आर्यों का दास, दस्यु नामक स्थानीय जनों से संघर्ष हुआ ये दस्यु इस देश के मूल निवासी थे।
* आर्यों की भाषा : संस्कृत

जनजातीय संघर्ष :

* इंद्र ने आर्यों के शत्रुओं को बार-बार पराजित किया। ऋग्वेद में इन्द्र को पुरंदर कहा गया है (दुर्गों को तोड़ने वाला)
* आर्यों की जीत का कारण : अश्वचालित रथ व कवचधारी सैनिक
* भरत व त्रित्सु आर्यों के शासक वंश थे। इस देश का नाम इसी भरत कुल के कारण भारतवर्ष पड़ा
* भरत व 10 राजाओं के बीच युद्ध को दसराज्ञ युद्ध कहा है। जो परुष्णी नदी (वर्तमान रावी) तट पर हुआ

SHREERAM CLASSES

* इस युद्ध मे सुदास की जीत हुई और भरतों की प्रभुता कायम हुई। पराजितों मे पुरुजन सबसे महान थे। कालांतर मे भरतों और पुरुओं के मध्य मैत्री हुई और दोनो ने मिलकर नया शासक कुल बनाया जो कुरु नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर कुरुजनों ने पांचालों के साथ मिलकर ऊच्च गंगा मैदान मे अपना संयुक्त राज्य स्थापित किया। यहाँ कुरु-पांचालो ने उत्तर-वैदिक काल मे बड़ा महत्व प्राप्त किया।

भौतिक जीवन :

* भारत मे आर्यों की सफलता के कारण थे घोड़े, रथ व कांसे के बेहतर हथियार।
* कृषि की जानकारी थी : ऋग्वेद मे फाल का उल्लेख। ऋतुओं की जानकारी थी।
* ऋग्वेद मे गाय व सांड की अत्यधिक चर्चा के कारण इन्हे पशुचारक कहा जाता है।
* ऋग्वेद मे युद्ध का पर्याय गविष्टि (गाय का अन्वेषण) है।
* पुरोहितों को दान-दक्षिणा मे गायें व दासियाँ होती न कि भूमि।
* शिल्पी: बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार
* अयस- तांबा/कांसा
* व्यापार X
* हरियाणा के भगवानपुरा से उत्तर-हड़प्पाकालीन मृदभांडो के साथ चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) पाए है जिनकी तिथि ऋग्वैदिक युग के समान है। (1600-1000 ई.पू.)
* लोहा व अनाज के अवशेष X

राजनीतिक व्यवस्था :

* आर्यों का प्रशासन तंत्र कबीले के प्रधान के हाथों चलता था, क्योंकि वही युद्ध का सफल नेतृत्व करता था। वह राजन (अर्थात राजा) कहलाता। यह पद आनुवंशिक हो चुका था।
* राजा एक प्रकार का सरदार था उसके हाथ मे असीमित अधिकार नहीं थे क्योंकि उसे कबायली संगठनों से सलाह लेनी पड़ती थी।
* 'समिति' - कबीले की आम सभा थी जो राजा को चुनती थी, राजा कबीले के मवेशी की रक्षा करता, युद्ध मे लड़ता।
* ऋग्वेद मे कबीले या कुलों के आधार पर बने बहुत से संगठनो का उल्लेख है, जैसे सभा, समिति, विदथ, गण। ये संगठन विचार-विमर्श करते व सैनिक तथा धार्मिक कार्य देखते
* स्त्रियां भी सभा और विदथ मे भाग लेती थी।
* सभा व समिति ये दोनो संगठन इतने महत्वपूर्ण थे कि प्रधान या राजा भी समर्थन के लिए इनका मुंह जोहते रहते थे। (सभा = श्रेष्ठ लोगों की, समिति = आम लोगों की)
* दैनिक प्रशासन मे राजा की सहायता करने वाला सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी पुरोहित था, ऋग्वेद काल मे वसिष्ठ और विश्वामित्र दो महान पुरोहित हुए। वसिष्ठ रूढ़िवादी तथा विश्वामित्र उदार था। लोगों को आर्य बनाने के लिए विश्वामित्र ने गायत्री मंत्र की रचना की
* पुरोहित राजा को कर्तव्यों का उपदेश देते, गुणगान करते। बदले मे गायों व दासियों की दान-दक्षिणा पाते

SHREERAM CLASSES

* पुरोहित के बाद प्रमुख स्थान सेनानी का था। जो शस्त्र चलाना जानता था।
* कर वसूलने वाले अधिकारी का उल्लेख नहीं है। प्रजा स्वेच्छा राजा को उसका अंश स्वेच्छा से देती जिसे बलि (अर्थात चढ़ावा) कहते थे।
* युद्ध में प्राप्त भेंट और लूट की वस्तुएं सभा में बांटी जाती।
* आर्यों की प्रशासनिक इकाई :- कुल → ग्राम → विश → जन → राष्ट्र
* कुल या परिवारों का प्रधान कुलप, ग्राम का प्रधान ग्रामणी, विश का प्रधान विशपति तथा जन के शासक को राजन कहा जाता।
* 'व्राजपति' चारागाह/गोचर भूमि या बड़े जत्थे का प्रधान।
* पुरप – दुर्गपति, स्पश – गुप्तचर, उग्र – अपराधियों को पकड़ने वाले
* राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती, युद्ध के समय व्रात, गण, ग्राम व सर्ध नामक विभिन्न कबायली टोलियां युद्ध लड़ती।

कबीला और परिवार :

* सामाजिक संगठन का आधार गोत्र या जन्ममूलक संबंध था। व्यक्ति की पहचान उसके गोत्र से होती थी (या कुल से)। परिवार का प्रधान: कुलप/गृहपति।
* लोगों की सबसे अधिक आस्था अपने कबीले के प्रति रहती जिसे जन कहा जाता था। किसी जन में सदस्यों की संख्या 100 से अधिक नहीं होती। ऋग्वेद में जन शब्द का उल्लेख 275 बार हुआ है। लेकिन जनपद (अर्थात राज्यक्षेत्र) का एकबार भी नहीं। क्योंकि इन दिनों राज्य स्थापित नहीं हो पाया था। लोग कबीले के अंग थे।
* ऋग्वेद में दूसरा महत्वपूर्ण शब्द जो कबीले के अर्थ में मिलता है, वह है 'विश' इसे अनुवाद में गोत्र या कबीला भी कहा जा सकता है। 170 बार उल्लेख।
* विश को लड़ाई के उद्देश्य से ग्राम नामक टोलियों में बांटा गया था, ग्राम जब आपस में टकराते तो संग्राम या युद्ध होता।
* परिवार के अर्थ में 'गृह' शब्द था जो बार-बार आया है। रोमन समाज की तरह यह पितृसत्तात्मक परिवार था। अनेक पीढ़ियां साथ-साथ रहती।
* ऋग्वेद में कहीं बेटी के लिए कामना नहीं की गई है। वीर पुत्रों के लिए प्रार्थना की जाती। * शिक्षित/विदुषी स्त्रियां – लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, आपला एवं विश्वारा।
* स्त्रियां सभा-समितियों में भाग ले सकती थी, पतियों के साथ यज्ञ कर सकती थी।
* सूक्तों की रचनाएं करने वाली पाँच महिलाएं ज्ञात हैं। सूक्तों की रचना मौखिक होती थी।
* जुड़वा भाई बहन यम और यमी की कहानी में यमी ने यम से विवाह का प्रस्ताव रखा यम ने अस्वीकार कर दिया। * 'अमाजू' - आजीवन कुंवारी महिला।
* बहुपति-प्रथा थी। नियोग-प्रथा (विधवा द्वारा देवर से विवाह) व विधवा-विवाह का प्रचलन था, लेकिन बाल विवाह नहीं।

सामाजिक वर्गीकरण :

* वर्ण शब्द का प्रयोग रंग के अर्थ में होता था। आर्य भाषी गौरे व मूलवासी काले वर्ण के थे।
* आर्यों द्वारा जीते गए दास व दस्यु जनों के लोग दास (गुलाम) व शूद्र हो गए।

* यहीं से सामाजिक असमानता शुरू हुई । जीती गई वस्तुओं मे कबीले के सरदारों और पुरोहितों को अधिक हिस्सा मिलता ।
* धीरे-धीरे कबायली समाज तीन वर्गों मे बंट गया – योद्धा, पुरोहित व प्रजा इसमे चौथा वर्ग शूद्र कहलाया जो ऋग्वेद काल के अंत मे दिखाई पड़ता है। क्योंकि इसका उल्लेख ऋग्वेद के दशम मंडल मे है जो सबसे अंत मे जोड़ा गया।
* समाज का व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण हुआ । लेकिन यह विभेदीकरण इतना कड़ा नहीं था । जैसे ऋग्वेद मे एक परिवार का सदस्य कहता है – " मैं कवि हूं, मेरे पिता वैद्य है, मेरी माता चक्की चलाने वाली है, भिन्न-भिन्न व्यवसायों मे जीविकोपार्जन करते हुए हम एकसाथ रहते हैं।"
* मुख्य आर्थिक आधार पशुचारण था अतः कर/राजस्व वसूली की गुंजाइश कम थी

ऋग्वैदिक देवता :

* हर समुदाय को अपना धर्म का आलोक अपने ही परिवेश में मिलता है। वर्षा का होना, सूर्य और चन्द्र का उदय, नदी, पर्वत आदि का अस्तित्व, ये सब बातें वैदिक लोगों के लिए पहेली थी अतः उन लोगों ने इन प्राकृतिक शक्तियों को अपने मन में दैहिक रूप देकर इन्हे प्राणियों के रूप मे देखा और इनमे मानव व पशु के गुण आरोपित किए।
* ऋग्वेद का सबसे प्रतापी देवता – इन्द्र (पुरन्दर/किले तोड़ने वाला)
* इंद्र आर्यों के युद्ध नेता के रूप मे चित्रित है, जिसने असुरों से लड़ने मे आर्य सैनिकों का नेतृत्व किया और उन्हे विजय दिलाई। इंद्र पर 250 सूक्त है। वह वर्षा करनेवाला बादल का देवता है
* अग्नि का दूसरा स्थान है, उसपर 200 सूक्त है । समझा जाता है कि अग्नि मे डाली आहुतियाँ धूंआ बनकर आकाश मे जाती है और अंततः देवताओं को मिल जाती है।
* वरुण का तीसरा स्थान है जो जल या समुद्र का देवता है। उसे ऋतु अर्थात प्राकृतिक संतुलन का रक्षक कहा गया है। जगत मे जो भी घटना होती है वह उसी की इच्छा का परिणाम है।
* सोम वनस्पतियों का अधिपति माना गया है तथा एक मादक रस का नाम इसी के नाम पर पड़ा है। ऋग्वेद मे पौधे से सोमरस बनाने की विधि बताई गई है। (वनस्पति देवता)
* मरुत आँधी के देवता
* द्यौ - आकाश का देवता (सबसे प्राचीन)
* आश्विन - विपत्तियों को हरने वाले देवता।
* पूषन - पशुओ का देवता
* देवियाँ :- अदिति व उषा (प्रभात/प्रगति व उत्थान की)

उत्तर-वैदिक अवस्था : (1000-600 ई.पू.)

* उत्तर वैदिक काल का इतिहास मुख्यतः उन वैदिक ग्रंथों पर आधारित है जिनकी रचना ऋग्वैदिक काल के बाद हुई।
* ऋग्वैदिक संहिता सबसे पुराना ग्रंथ है। वैदिक सूक्तों/मंत्रों के संग्रह को संहिता कहते हैं।
* गाने के लिए ऋग्वैदिक सूक्तों को धुन मे बांधकर सामवेद संहिता तैयार किया।
* यजुर्वेद मे यज्ञ अनुष्ठान है।
* अथर्ववेद में विपत्तियों तथा व्याधियों के निवारण हेतु तंत्र-मंत्र संगृहीत हैं।
* इस काल मे प्राप्त बस्तियों को चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) स्थल कहते हैं। (लौहअवस्था के)
* ये लोहे के हथियारों का इस्तेमाल करते।
* कुरु-पांचालों की सत्ता दिल्ली क्षेत्र के ऊपरी दोआब तक फैली। उन्होने हस्तिनापुर (मेरठ) को अपनी राजधानी बनाया। कुरु कुल का इतिहास भारत-युद्ध को लेकर मशहूर है। जिस पर 'महाभारत' नामक महाकाव्य विख्यात है। यह युद्ध कौरवों व पांडवों के बीच 950 ई.पू. मे हुआ। ये दोनो कुरु कुल के ही थे। इस युद्ध से समस्त कुरुवंश का नाश हो गया।
* वर्तमान बरेली, बदायूं और फर्रुखाबाद जिलों मे फैला पांचाल राज्य उत्तर वैदिक साहित्य मे वर्णित अपने दार्शनिक राजाओं और तत्वज्ञानी ब्राह्मणों को लेकर विख्यात था।

लौहावस्था संस्कृति और उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था :

* लगभग 1000 ई.पू. मे लौह धारवाड़ (कर्नाटक), गंधार (पाकिस्तान), बलूचिस्तान, पंजाब प. उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश मे इस्तेमाल होने लगा। (नोक, बरछे, फाल...)
* ऊपरी गंगा मैदानों मे लोहे की कुल्हाडी जंगल साफ करने मे काम ली गई। (कृषि औजार कम)
* गंगा घाटी मे पाए गए सबसे पुराने लौहास्त्र 7वीं सदी ई.पू. के हैं।
* उत्तर वैदिक ग्रंथों में इस धातु को श्याम/कृष्ण अयस कहा गया है।
* वैदिक ग्रंथों में 6, 8, 12, 24 तक बैल हल जोतने की चर्चा है। यज्ञों मे पशु-बलि के कारण बैलों की कमी रही।
* शतपथ ब्राह्मण मे हल संबंधी अनुष्ठान का लंबा वर्णन है। (Ex सीता के पिता और विदेह के राजा जनक ने हल चलाया था।)
* मुख्य फसल = चावल व गेहूँ। वैदिक ग्रंथों मे चावल का नाम 'व्रीहि' है। चावल का अवशेष हस्तिनापुर मे मिला है। एटा जिले मे अतरंजीखेडा मे भी चावल मिला है।
* उत्तर वैदिक काल के लोग 4 प्रकार के मृदभांडों से परिचित थे Ex- काला-व-लाल मृदभांड, काली पॉलिशदार मृदभांड, चित्रित धूसर मृदभांड और लाल मृदभांड। लेकिन चित्रित धूसर मृदभांड सर्वोपरि है।
* स्वर्णकारों व आभूषण निर्माताओं का उल्लेख है। जो सम्पन्न वर्ग की आवश्यकता पूर्ति करते
* खेती व विविध शिल्पों की बदोलत अब उत्तरवैदिक काल के लोग स्थायी जीवन अपनाने लगे।
* इलाहाबाद के पास हस्तिनापुर व कौशांबी वैदिक काल के अंत मे आद्यविकास वाले नगर थे। इन्हे आद्य नगरीय स्थल (प्रोटो अर्बन साइट) कहा जाता है।
* वैदिक ग्रंथों मे समुद्र व समुद्री यात्रा की चर्चा है। * निष्कर्ष:- वैदिक लोगों के जीवन मे भारी उन्नति हुई।

SHREERAM CLASSES

राजनीतिक संगठन :

* अब ऋग्वैदिक जनता वाली सभा व समिति का अस्तित्व अधिक नहीं रहा सत्ता मे राजाओं व अभिजात्यों का बोलबाला हो गया । अब सभा मे स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध हो गया तथा कुलीनो व ब्राह्मणों का प्रभुत्व हो गया ।
* कबीले का सरदार अब शासक/राजा बन गया । कबीले के नाम पर अब प्रदेशों के नाम पड़ने लगे । जैसे : पहले पांचाल एक जन/कबीला था बाद मे यह प्रदेश विशेष बना ।
* 'राष्ट्र' शब्द जिसका अर्थ क्षेत्र या प्रदेश होता है, सर्वप्रथम इसी समय मिलने लगा ।
* राज्य के प्रधान या राजा निर्वाचित होता था जो शारीरिक व अन्य गुणों से सर्वश्रेष्ठ होता वही राजा चुना जाता था । अब राजा ने अपना पद आनुवांशिक बना लिया
* राजा राजसूय यज्ञ करता था, जिसका अर्थ था - राजा को दिव्य शक्ति मिल गई ।
* राजा अश्वमेध यज्ञ से एक घोड़ा छोड़ता, जो बेरोक जिन क्षेत्रों से गुजरता वहां उसका एकछत्र राज्य होता
* राजा वाजपेय यज्ञ (रथदौड़) द्वारा अन्य बन्धुओं के रथों से आगे निकलता व शक्ति प्राप्त करता
* कर संग्रहण अधिकारी - 'संग्रीहीता' (कोषाध्यक्ष) / भागदुघ (अर्थमंत्री)
* निचले स्तर मे प्रशासन का भार ग्राम-सभाओं पर रहता, जिनपर प्रमुख कुलों के प्रधानों का नियंत्रण रहता । ये स्थानीय वाद-विवाद सुलझाते ।
* सेना स्थायी नही थी, युद्ध के समय कबीले के जवानों के दल भरती किए जाते । युद्ध मे विजय पाने की कामना से राजा अपने भाई-बंधुओं (विश्) के साथ एक ही थाली मे भोजन करता ।
* राजा के दैवीय उत्पत्ति सिद्धांत : ऐतरेय ब्राह्मण
* रत्नी - राजपरिषद के अधिकारी * सूत - रथ सेना का नायक
* अग्निष्टोम - यज्ञ जिसमे सोम पीया जाता तथा अग्नि को पशुबली दी जाती ।
* राजा को आय का 16 वाँ भाग मिलता - अथर्ववेद

सामाजिक व्यवस्था :

* उत्तर वैदिक समाज 4 वर्णो मे विभक्त था - ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजन्य), वैश्य, शूद्र ।
* ब्राह्मण सबसे प्रतिष्ठित - धार्मिक अनुष्ठान व यज्ञ करते, युद्ध मे राजा की जीत हेतु देव आराधना करते
* राजाओं के परिजन होते हुए भी वैश्य जन साधारण की श्रेणी मे रखे गए व कार्य सौंपा - कृषि, पशुपालन व उत्पादन संबंधी । * व्यवसाय = आनुवांशिक ।
* राजस्व केवल वैश्य ही चुकाते ।
* उपर के तीनो वर्णो को उपनयन संस्कार (वैदिक मंत्रो के साथ जनेऊ धारण कर अनुष्ठान करना) का अधिकार था । शूद्र केवल उक्त तीनो वर्णो का सेवक होता । तीनो को द्विज कहा जाता था ।
* गौत्र-प्रथा इसी काल मे शुरु हुई । गौत्र शब्द का अर्थ - गोष्ठ (स्थान जहां कुल का गोधन पाला जाता) परन्तु बाद मे इसका अर्थ - एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न लोगों का समुदाय से हो गया । एक ही गौत्र मे मूल पुरुष वाले लोगों के साथ विवाह निषिद्ध हुआ ।
* समाज मे 4 आश्रम - ब्रह्मचर्य (छात्रावस्था), गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ (वनवासावस्था), सन्यास । जाबालोपनिषद मे चारों आश्रमों का विवरण मिलता है ।
* स्त्रियों के लिए व शूद्रों के लिए उपनयन संस्कार नही था । स्त्रियों को पैतृक संपत्ति अधिकार भी नहीं ।

धर्म और दर्शन :

* यज्ञ इस संस्कृति का मूल था तथा यज्ञ के साथ-2 अनेकानेक अनुष्ठान व मंत्रविधियों का प्रचलन हुआ।
* इंद्र और अग्नि अब इतने प्रभावी देवता नहीं रहे। इनका स्थान देवता 'प्रजापति' ने ले लिया
* 'रुद्र' - पशुओं का देवता, अब इसने शिव के रूप में प्रसिद्धि पायी।
* 'विष्णु' अब उनका पालक व रक्षक बन गया।
* 'पूषन' - जो पशुओं का रक्षक था, अब शूद्रों का देवता बन गया।
* मूर्तिपूजा का कुछ आभास मिलने लगा।
* वैदिक आर्यों मे प्रचलित बहुत से अनुष्ठान हिन्द-यूरोपीय भाषा भाषियों के कर्मकांड से मिलते हैं, लेकिन कुछ हिन्द-भूमि मे विकसित प्रतीत होते हैं।
* समस्त मंत्रों व यज्ञों का सृजन, अंगीकरण और विस्तारण पुरोहितों ने किया जो ब्राह्मण कहलाते थे। जिनका ज्ञान-विज्ञान पर एकाधिकार था।
* 'शतपथ ब्राह्मण' - अश्वमेध यज्ञ मे पुरोहित को उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम दिशाएं देनी हैं।

प्रमुख दर्शन एवं रचियता

दर्शन	रचियता/प्रवर्तक
चार्वाक (भौतिकवादी)	चार्वाक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण (ब्रह्मसूत्र)
वैशेषिक	कणाद/उलूक

SHREERAM
CLASSES

स्मरणीय तथ्य

* हल की जुताई विवरण - शतपथ ब्राह्मण
* बलि, शुल्क, भाग - राजस्व का रूप
* विश् द्वारा राजा के चुनाव विवरण - अथर्ववेद
* 12 प्रकार के रत्नियों (अधिकारियों) की जानकारी - शतपथ ब्राह्मण
* ब्राह्मण सूत का, क्षत्रिय सन का व वैश्य ऊन का यज्ञोपवीत धारण करते हैं। - तैत्तिरीय ब्राह्मण
* मीमांसा दर्शन वैदिक कर्मकांड का शास्त्रीय रूप मे प्रतिपादन करने पर बल देता है। वेद द्वारा विहित कर्म ही धर्म है।
* राजा वही होता है जिसे प्रजा का समर्थन प्राप्त हो। → शतपथ ब्राह्मण।
* राजकीय यज्ञों मे सर्वाधिक प्रसिद्ध व महत्वपूर्ण यज्ञ - अश्वमेध यज्ञ।
* लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की पत्नि तथा वैदिक ऋचाओं की रचयिता थी।
* घोषा अविवाहित कन्या थी।
* ऋग्वैदिक शिक्षा पद्धति - मण्डूक सूक्त
* पुनर्जन्म का सिद्धांत सर्वप्रथम - शतपथ ब्राह्मण
* अश्वमेध, वाजपेय व राजसूय आदि यज्ञों मे छिपा मूल उद्देश्य — कृषि उत्पादन बढ़ाना
* सर्वाधिक बड़ा लौह पुंज (भंडार) - अतंरजीखेड़ा
* उत्तरवैदिक काल मे ही मूर्तिपूजा शुरू हुई।
* निष्क (सोने का सिक्का), शतमान (चांदी का)
* सबसे विशाल उपनिषद - बृहदारण्यक
* यज्ञ एक ऐसी नौका है जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। → मुंडकोपनिषद्
* सर्वप्रथम निष्काम कर्म सिद्धांत - ईशोपनिषद् में
* पणि - सुदूर देशों तक जानेवाले व्यापारी

विभिन्न परीक्षाओं मे पूछे गए - (वैदिक सभ्यता)

* आर्य शब्द का अर्थ - श्रेष्ठ या कुलीन
* वैदिक लोगों की फसलें - जौ, गेहूं, चावल

मगध साम्राज्य व महाजनपद

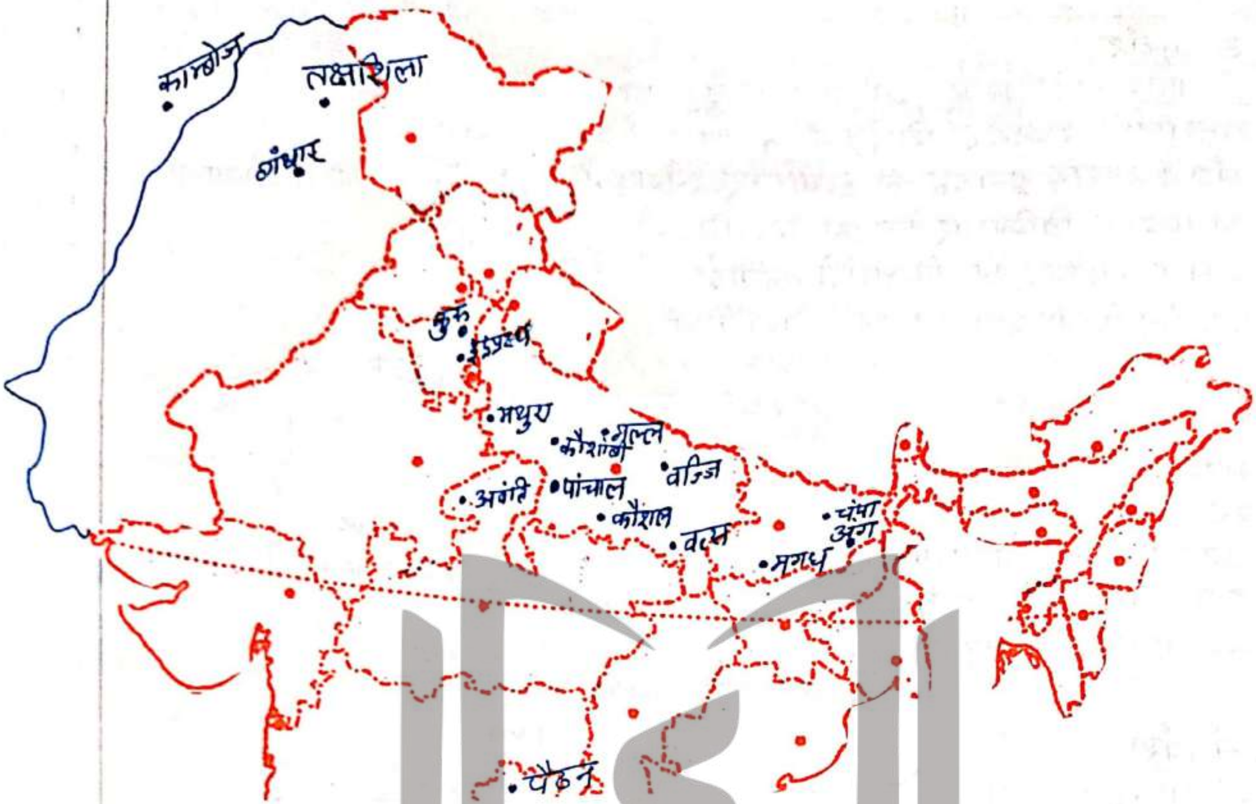

* छठी शताब्दी ई.पू. से पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बिहार मे लोहे का व्यापक प्रयोग होने से यहां बड़े-बड़े प्रादेशिक/जनपद राज्यों के निर्माण की परिस्थितियां बनी।
* खेती हेतु आवश्यक औजारों की मदद से पैदावार बढ़ी। राजा का राजस्व बढ़ा व सैनिकों की संख्या बढ़ी।
* भौतिक लाभों व कृषि जमीन का महत्व बढ़ा व अपने साम्राज्य विस्तार की भावना पनपी।
* यह सब बुद्ध के जन्म से पूर्व हुआ तथा 16 महाजनपदों का उदय हुआ। इनकी जानकारी हमें बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में मिलती है।
* इनमें मगध, कोसल, वत्स व अवंति ये चार सबसे शक्तिशाली थे।

* गणतंत्र महाजनपद : 2 - वज्जि, मल्ल (यहां शासन राजा नहीं गण/संघ द्वारा होता था)
* राजतंत्र महाजनपद : 14 - यहां शासन व्यवस्था राजा द्वारा संचालित होती थी।

1. वज्जि -
2. मल्ल -
3. काशी - वाराणसी
4. कोशल - श्रावस्ती
5. अंग - चम्पा
6. मगध - राजगृह
7. शूरसेन - मथुरा
8. गान्धार - तक्षशिला
9. चेदि - सोत्थीवती/शक्तिमति
10. कम्बोज - हाटक/राजपुर
11. अवंति - उज्जैन व महिष्मति (2 राजधानियां)
12. पान्चाल - अहिक्षत्र व कांपिल्य
13. कुरु - इन्द्रप्रस्थ
14. अश्मक - पैठन (द. भारत का एकमात्र)
15. वत्स - कौशाम्बी
16. मत्स्य - विराटनगर

SHREERAM CLASSES

मगध के राजवंश :

1. हर्यक वंश :
* संस्थापक - बिम्बिसार , जो महात्मा बुद्ध का मित्र व संरक्षक
* राजधानी - राजगृह/ गिरिव्रज * प्रथम बौद्ध संगीति
* अंग के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या कर अंग को मगध साम्राज्य में मिलाया।
* अजातशत्रु बिम्बिसार का का उत्तराधिकारी
* इसने राजगृह की किलेबंदी करवाई
* उदयिन अजातशत्रु का उत्तराधिकारी व जैन धर्मावलंबी था ।

2. शिशुनागवंश :
* संस्थापक : शिशुनाग
* राजधानी : वैशाली
* उत्तराधिकारी : कालाशोक
* दूसरी बोधसंगीति का आयोजन किया (वैशाली)
* राजधानी पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया।

3. नंदवंश
* संस्थापक : महापद्मनंद (पाणिनी का मित्र)
* राजधानी : पाटलिपुत्र
* उत्तराधिकारी व अंतिम शासक : धनानंद
* इस दौरान 326 ई.पू. में यूनानी राजा सिकंदर ने भारत पर आक्रमण (पंजाब)
* चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से धनानंद को पराजित कर मौर्य वंश की नींव रखी।

SHREERAM
— CLASSES —

बौद्ध धर्म व महात्मा बुद्ध

* छठी शताब्दी ई.पू. को गंगा घाटी व उत्तर भारत में 62 धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण बौद्ध धर्म व जैन धर्म था। इनका उद्देश्य था ब्राह्मण धर्म व वैदिक कर्मकाण्डों व आडम्बरों के खिलाफ समाज का सुधार करना।

महात्मा बुद्ध का परिचय

जन्म से गृहत्याग

- जन्म : 563 ई.पू.
- स्थान : लुंबिनी (कपिलवस्तु, नेपाल)
- आधुनिक नाम : रुम्मिनदेई
- कुल : शाक्य
- गौत्र : गौतम
- बचपन नाम : सिद्धार्थ
- पिता : शुद्धोधन (शाक्य कुल मुखिया)
- शाक्य : इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय
- माता : महामाया (7वें दिन निधन)
- पालन : प्रजापति गौतमी (विमाता/मौसी)
- पत्नि : यशोधरा (कोलिय गणराज्य)
- पुत्र : राहुल
- गृहत्याग : 29 वर्ष आयु में
- घटना : महाभिनिष्क्रमण
- कारण : सांसारिक दुःख
- गृहत्याग प्रतीक : घोड़ा

गृहत्याग से ज्ञान प्राप्ति

- वैराग्य उत्पन्न करने वाले 4-दृश्य : 1. वृद्ध, 2. रोगी, 3. मृत, 4. प्रसन्न संन्यासी
- प्रथम गुरु : आलार कलाम (सांख्य दर्शन के आचार्य, अतः बौद्धधर्म पर सांख्य दर्शन का प्रभाव है।)
- ज्ञान प्राप्ति : 35 वर्ष आयु में
- स्थान : उरुवेला (बोधगया, बिहार)
- वृक्ष : वटवृक्ष (पीपल)
- दिन : 49 वें (तपस्या)
- दिन : बैशाख पूर्णिमा
- नदी : निरंजना (पुनपुन)
- घटना : सम्बोधि
- नाम : सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध

ज्ञान प्राप्ति से निधन

- प्रथम उपदेश : 5 ब्राह्मण (सारनाथ, UP)
- पांचों बुद्ध के शिष्य बने
- सर्वा. उपदेश : श्रावस्ती (कौशल की राजधानी)
- सर्वाप्रचार : कौशल
- प्रचार केन्द्र : मगध
- प्रथम अनुयायी : 2-शूद्र तपस्सु व मल्लिक
- प्रधान शिष्य : उपालि (नाई)
- प्रिय शिष्य : आनंद (चचेरा भाई)
- निधन : 483 ई.पू. (80 वर्ष आयु)
- स्थान : कुशीनारा (UP)
- नदी : हिरण्यवती
- कारण : चन्द लुहार के घर दूषित भोजन से।
- घटना : महापरिनिर्वाण

महत्वपूर्ण घटनाएँ व प्रतीक

1. माता के गर्भ में आना	हाथी
2. बुद्ध का जन्म लेना	कमल
3. गृहत्याग	घोड़ा
4. ज्ञान प्राप्ति	बोधिवृक्ष
5. प्रथम उपदेश	धर्मचक्र
6. महापरिनिर्वाण	स्तूप

बुद्ध पूर्णिमा का महत्व

* इस दिन बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति, निधन। (यह बैशाख पूर्णिमा भी...)

समकालीन मगध शासक

* बिम्बिसार
* अजातशत्रु

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ

चार आर्य सत्य (4 Noble Truth)

1. दुःख - जीवन दुःखों से भरा है।
2. दुःख समुदाय/कारण - तृष्णा (तृष्णा का कारण : अज्ञान)
3. दुःख निरोध - तृष्णा पर विजय
4. दुःख निरोध मार्ग - आष्टांगिक मार्ग

आष्टांगिक मार्ग (Eight Fold Path)

1. सम्यक दृष्टि (Right Thought)
2. सम्यक संकल्प (Right Belief)
3. सम्यक वाणी (Speach)
4. सम्यक कर्मांत (Action)
5. सम्यक आजीविका (Livelihood)
6. सम्यक व्यायाम (Endeavour/प्रयत्न)
7. सम्यक स्मृति (Recollection)
8. सम्यक समाधि (Meditation)

Short Trick : व्यास के आवास पर स्मृति की न दृष्टि

SHREERAM CLASSES

* निर्वाण : आष्टांगिक मार्गों का पालन करने से तृष्णा नष्ट हो जाती है, उसे निर्वाण कहते हैं। बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य "निर्वाण" है, जिसका अर्थ है - दीपक बुझ जाना अर्थात जीवन-मरण-चक्र से मुक्त हो जाना
* निर्वाण प्राप्ति हेतु कठोर तप नहीं गृहस्थी में रहकर भी आष्टांगिक मार्ग अपनाए जा सकते हैं। इसे मध्यम मार्ग (middle path) कहते हैं।

सदाचारी जीवन के 10 नैतिक नियम/दस शील :

1. सत्य
2. अहिंसा
3. अस्तेय (चोरी न..)
4. अपरिग्रह (संपत्ति न..)
5. ब्रह्मचर्य

(जैन धर्म वाले भी हैं।)

6. सुगंधित वस्तु त्याग
7. स्त्रियों से दूर रहना
8. कोमल बिस्तर का त्याग
9. नृत्य, गायन, मादक से दूर रहें
10. असमय भोजन न करना

(अपराह्न भोजन करके, सुगंधित द्रव्यों के, कोमल बिस्तर का त्याग)

- त्रिरत्न : बुद्ध, धम्म, संघ (The enlightened), (धम्म = Doctrine), (संघ = Commune)
- त्रिपिटक : (यानि तीन टोकरी) - सुत्त, विनय एवं अभिधम्म पिटक

बौद्ध संगीतियाँ

संगीति	सन्	शासक	स्थान	अध्यक्ष	विवरण
1.	483 ई.पू.	अजातशत्रु	राजगृह	महाकश्यप	बौद्ध शिक्षाएं 2-पिटकों में संकलित : सुत्त व विनयपिटक
2.	383 ई.पू.	कालाशोक	वैशाली	सबाकामी	भिक्षु संघ में फूट : बंटे - थेरवादी (परम्परावादी) व महासंघिक
3.	251 ई.पू.	अशोक	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्ततिस्स	तीसरा पिटक : अभिधम्म पिटक की रचना
4.	98 ई.	कनिष्क	कुण्डलवन (JK)	वसुमित्र	दो भागों में बंटा : हीनयान (थेरवादी), महायान (महासंघिक)

अंतर

उच्च मार्ग / महायान	हीनयान / निम्न मार्ग
1. बुद्ध को ईश्वर का अवतार मानते हैं	1. बुद्ध को महापुरुष मानते हैं।
2. बुद्ध की मूर्तिपूजा पर बल	2. मूर्तिपूजा विरोधी
3. भाषा : संस्कृत	3. भाषा : पालि
4. करुणा व भक्ति पर बल	4. प्रज्ञा व ज्ञान पर बल
5. परिवर्तनवादी / उदारवादी	5. परम्परावादी / परिवर्तन विरोधी
6. प्रसार - चीन, जापान	6. प्रसार - श्रीलंका, जावा, बर्मा

प्रमुख तथ्य :

* बौद्ध व जैन दोनो अनीश्वरवादी है। ईश्वर को नहीं मानते।
* वेदों में अविश्वास, कर्मकाण्ड व आडम्बर विरोधी।
* प्रतीत्यसमुत्पाद (Dependent Origination) - किसी वस्तु के होने पर अन्य वस्तु की उत्पत्ति होती है। इसे कारण सिद्धांत कहते हैं।

SHREERAM CLASSES

जैन धर्म व महावीर स्वामी

* "जैन" शब्द की उत्पत्ति 'जिन' से हुई है, जिसका अर्थ है 'विजेता'
* महावीर स्वामी 42 वर्ष की आयु में कैवल्य/ज्ञान प्राप्ति के बाद जिन कहलाये।
* जैन धर्म में अब तक 24 तीर्थंकर हुए हैं। तीर्थंकर का अर्थ है- रास्ता दिखाकर भवसागर पार कराने वाला।
* जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव थे, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

जैन तीर्थंकर :

1. ऋषभदेव/आदिनाथ	7. सुपार्श्व	13. विमल	19. मल्लिनाथ
2. अजीतनाथ	8. चन्द्रप्रभा	14. अनन्त	20. मुनिसुब्रत
3. संभवनाथ	9. पुष्पदंत	15. धर्म	21. नेमिनाथ
4. अभिनंदन	10. शीतल	16. शांति	22. अरिष्टनेमि
5. सुमति	11. श्रेयान्स	17. कुन्थु	23. पार्श्वनाथ
6. पद्मप्रभु	12. वासुपूज्य	18. अरह	24. महावीर

* पार्श्वनाथ व महावीर को छोड़कर शेष की ऐतिहासिकता संदिग्ध है।
* पार्श्वनाथ का जन्म 850 ई.पू. वाराणसी/काशी में हुआ, इनके पिता अश्वसेन काशी के राजा थे।
* पार्श्वनाथ ने 4 महाव्रत दिए - सत्य, अहिंसा, अस्तेय व अपरिग्रह। इनमे ब्रह्मचर्य महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।

महावीर स्वामी : परिचय -

* जन्म : 540 ई.पू. कुण्डग्राम (वैशाली, बिहार) - क्षत्रिय परिवार में
* बचपन नाम : वर्द्धमान
* पिता : सिद्धार्थ - ज्ञातक कुल व कुण्डग्राम के प्रधान थे (वज्जि संघ)
* माता : त्रिशला - वैशाली के लिच्छवी वंश के शासक चेटक की बहन।
* पत्नि : यशोदा
* पुत्री : अणोज्या/ प्रियदर्शना
* दामाद व अणोज्या का पति: जमालि था जो महावीर का प्रथम शिष्य बना।
* गृहत्याग : 30 वर्ष आयु में, बड़े भाई नंदिवर्धन की आज्ञा से।
* तपस्या : 12 वर्ष
* कैवल्य/ज्ञान प्राप्ति : जुंभिक ग्राम, ऋजुपालिका नदी, साल/शाल वृक्ष के नीचे
* ज्ञान प्राप्ति के बाद वर्द्धमान – जिन (इंद्रियों का विजेता), केवलिन, महावीर (पराक्रमी), निग्रंथ (बंधन रहित), अर्हत (योग्य) व नाथपुत कहलाए।
* प्रथम उपदेश : राजगृह
* प्रथम भिक्षुणी : चन्दना (चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री)
* गणधर : महावीर स्वामी के 11 शिष्य
* प्रचार की भाषा : प्राकृत (बुद्ध ने पालि भाषा में...)
* मृत्यु : 468 ई.पू. (72 वर्ष आयु), पावापुरी (बिहार)
* मृत्यु के बाद जैन संघ का अध्यक्ष : सुधर्मन

SHREERAM CLASSES

जैन धर्म का विभाजन :

* चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल मे मगध मे भीषण अकाल पड़ा, तब भद्रबाहु के नेतृत्व में एक दल स्वर्णबेलगोला चला गया व स्थूलभद्र व उनके समर्थक मगध में ही रहे।
* अकाल के बाद भद्रबाहु व अनुयायी वापस मगध लौटे, सफेद वस्त्र पहनकर, जो महावीर स्वामी के नग्न रहने के सिद्धान्त के खिलाफ था, अतः दोनों मे विवाद...
* विवादों के निपटान हेतु पाटलिपुत्र में 300 ई.पू. में प्रथम जैन संगीति का आयोजन हुआ। अध्यक्षता : स्थूलभद्र ने की
* इसी दौरान जैन धर्म श्वेताम्बर (तेरापंथी) व दिगम्बर (समैया) मे बंटा।
* भद्रबाहु के अनुयायी : श्वेताम्बर - श्वेत वस्त्र धारण
* स्थूलभद्र के अनुयायी : दिगम्बर - नग्न
* दूसरी जैन संगीति : 512 ई. को वल्लभी (गुज.) मे, अध्यक्षता : क्षमाश्रमण

जैनधर्म के सिद्धान्त

* त्रिरत्न : साँसारिक बन्धन से मुक्ति (मोक्ष) हेतु -
1. सम्यक दर्शन - तीर्थंकरों के उपदेशों में विश्वास
2. सम्यक ज्ञान - जैनधर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान
3. सम्यक चरित्र - अच्छे कार्य करने का निर्देश

पँच महाव्रत :
1. सत्य - सदा सत्य बोलना
2. अहिंसा - सर्वः बल... सोचना भी..
3. अस्तेय - चोरी न करना
4. अपरिग्रह - सम्पत्ति न रखना
5. ब्रह्मचर्य -

* गृहस्थ जीवन में रहने वाले जैनियों के लिये पञ्च महाव्रतों की कठोरता में कमी के कारण इन्हे अणुव्रत कहा गया।
* ज्ञान के 4 प्रकार - 1. मति (इंद्रियजनित), 2. श्रुति (सुनकर), 3. अवधि (दिव्यज्ञान), 4. कैवल्य (पूर्णज्ञान)
* ज्ञान के 3 स्रोत - 1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. शब्द द्वारा
* अनीश्वरवादी - ईश्वर सृष्टि का रचियता नहीं, बल्कि संसार की रचना 6 द्रव्यों से मिलकर हुआ है- धर्म, अधर्म, काल, आकाश, जीव, पुद्गल (भौतिक तत्व)
* आत्मवाद व अनेकात्मवाद -
  - संसार में आत्मा के अलावा कुछ नहीं है। समस्त (जीव, निर्जीव) में आत्मा है।
  - प्रत्येक का निर्माण 2- तत्वों द्वारा हुआ है = आत्मा + भौतिक तत्व
  - प्रत्येक आत्मा भौतिक तत्व से छुटकारा चाहती है, जिसे मोक्ष कहते हैं।
  - अनेकात्मवाद - भिन्न-2 जीवों में भिन्न-2 आत्माएं है।
* स्यादवाद (conditioned viewpoints)-
  - सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने पर उसके कई रूप देखे जा सकते हैं, अतः सभी का पूर्ण ज्ञान हो
* कर्म प्रधानता व पुनर्जन्म मे विश्वास - सबकुछ कर्मों पर आधारित है। जैसे: कम/अधिक आयु में मृत्यु अतः सत्कर्म द्वारा मोक्ष प्राप्ति संभव है। कठोर तप व व्रत (सलेखना) द्वारा मोक्ष...

SHREERAM CLASSES

* **वेदों में अविश्वास :**
  - क्योंकि वेदों में पशुबलि, यज्ञ, जीव हत्या, आडम्बर, असमानताएँ इत्यादि पर बल..
* **समानता पर बल :**
  - वर्ण व्यवस्था व जातिवाद का विरोध, सदाचार व महिला सम्मान पर बल।
* **जैन स्थापत्य कला :**
  - मथुरा कला (मौर्योत्तर युग) जैन धर्म कला का प्रसिद्ध केन्द्र।
  - गोमतेश्वर मूर्ति (70 फीट) - श्रवणबेलगोला (कर्ना.) : गंगवंश द्वारा
  - खजुराहो (mp) मंदिर - चंदेल शासकों द्वारा (11 वीं सदी)
  - देलवाड़ा जैन मंदिर - आबू (सिरोही) - विमलशाह द्वारा

जैन धर्म व बौद्ध धर्म

समानता

1. दोनो धर्म अनीश्वरवादी
2. दोनो ब्राह्मण धर्म/वैदिक आडंबरों के विरोधी
3. दोनो निवृत्त मार्ग का अनुसरण करने पर बल देते हैं।
4. दोनो धर्मों के प्रवर्तक क्षत्रिय वर्ग व राजपरिवार से सम्बंधित...।

अंतर

जैन धर्म	बौद्ध धर्म
1. यह बौद्ध धर्म से प्राचीन	1. जैन से नवीन
2. आत्मवादी	2. अनात्मवादी
3. कठोर तप	3. मध्यम मार्गी
4. वर्ण व्यवस्था पर कठोर प्रहार	4. वर्ण व्यवस्था पर क्रांतिकारी प्रहार
5. अत्यधिक अहिंसक	5. कम अहिंसक

SHREERAM
CLASSES

मौर्य-साम्राज्य (322-185 ई.पू.)

* जानकारी के स्त्रोत :

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
2. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
3. मेगस्थनीज की इंडिका
4. सोमदेव का कथासरित्सागर
5. अशोक के अभिलेख
6. रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
7. जैन व बौद्ध ग्रंथ
8. सिक्के

* पुराणों के अनुसार मौर्यों ने 137 वर्षों तक शासन किया।
* संस्थापक : चन्द्रगुप्त मौर्य - धनानंद (नंदवंश) को समाप्त करके।
* इसी दौरान लौहे का व्यापक स्तर पर इस्तेमाल हुआ।
* मृदभांड - उत्तरी श्याम चमकीले मृदभांड (NBPW : Northern Black Polished Ware)

चन्द्रगुप्त मौर्य (322-298 ई.पू.) :

* यूनानी साहित्य में चन्द्रगुप्त के नाम
  - सेन्ड्रोकोट्टस (स्ट्रेबो, एरियन, जस्टिन लेखकों ने)
  - एण्ड्रोकोट्टस (प्लूटार्क ने)
* चन्द्रगुप्त नाम - रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में।
* प्लूटार्क - "चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना से पूरे भारत को रौंद डाला।"
* राजधानी : पाटलिपुत्र
* चाणक्य/कौटिल्य/विष्णुगुप्त : चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री, ग्रंथ : अर्थशास्त्र, जो राजनीति से संबंधित है। अर्थशास्त्र को मैकियावली का प्रिंस व चाणक्य को भारत का मैकियावली कहते है।
* सेल्युकस निकेटर से युद्ध (305 ई.पू.) - यूनानी राजा सिकंदर का उत्तराधिकारी था। (पंजाब प्रांत) युद्ध में हराकर संधि के तहत 4 प्रांत पुत्री हेलना के विवाह मे दहेज रूपी लिए - हेरात, मकरान, काबुल व कंधार (हेमकाकं)
* चन्द्रगुप्त ने सेल्युकस को 500 हाथी उपहार में दिए व सेल्युकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को पाटलिपुत्र भेजा, जो 7 वर्षों तक रहा इसी दौरान "इंडिका" लिखी। इसमें पाटलिपुत्र को पालिमबोथ्रा कहा है। समाज के इसमे 7 वर्ग बताए हैं - कृषक, शिकारी, पशुपालक, व्यापारी-शिल्पी, योद्धा, दार्शनिक, मंत्री।
* मेगस्थनीज - "भारत में दास प्रथा नहीं है, भारत मे अकाल नहीं पड़ते, चोरियां नहीं.."
* मेगस्थनीज - "पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 5-5 सदस्यीय 6 समितियों द्वारा-"
* मेगस्थनीज भारतीय इतिहास लिखनेवाला प्रथम इतिहासकार।
* सुदर्शन झील का निर्माण - चन्द्रगुप्त का सौराष्ट्र गवर्नर पुष्यमित्र वैश्य द्वारा सौराष्ट्र के गिरनार पर्वत पर...। स्त्रोत : रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत भाषा)
* सलेखना से प्राण त्याग - 298 ई.पू. को चन्द्रगुप्त ने अंतिम दिन श्रवणबेलगोला पर्वत (कर्नाटक) पर बिताए, वहीं सलेखना/व्रत द्वारा प्राण त्यागे।

SHREERAM CLASSES

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

* चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र व उत्तराधिकारी, यूनानी लेखों में - अमित्रघात (शत्रु विनाशक) अमित्रघात संस्कृत शब्द है, यूनानी शब्द - 'अमित्रोचेड्स'
* उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला मे अशोक द्वारा विद्रोह दबाया गया।
* बिन्दुसार का सम्प्रदाय - 'आजीवक'
* विदेशी राजदूत
  * ऐंटियोकस-I (सीरिया) का राजदूत : डायमेकस
  * टालमी-II (   ) का राजदूत : डायनोशियस
* चाणक्य कुछ समय बिन्दुसार का भी १ प्रधानमंत्री रहा
* बिंदुसार ने सीरियाई शासक ऐंटियोकस से 3-चीजें माँगी - 1. मदिरा, 2. सूखेमेवे/अंजीर, 3. दार्शनिक लेकिन ऐंटियोकस ने दार्शनिक बेचने से मना किया।
* मृत्यु : 273 ई.पू.

अशोक (273-232 ई.पू.) :

* बिन्दुसार का पुत्र व उत्तराधिकारी। इससे पूर्व वह तक्षशिला, अवंति और उज्जैन का गवर्नर रह चुका था।
* माता : सुभद्रांगी, * पत्नि : कारुवाकी, * पुत्र : महेन्द्र * पुत्री : संघमित्रा।
* सिंहली अनुश्रुति - अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या करके राजगद्दी प्राप्त की।
* कलिंग युद्ध (261 ई.पू.)
* शासनकाल के 8वें वर्ष * जानकारी : 13वें शिलालेख में। * कलिंग राजा : नंदराज
* एक लाख लोग मारे गए/दास बना लिए। इस विभीषिका को देखकर अशोक का हृदय परिवर्तित हो गया व युद्ध न करने का निर्णय लिया। डेढ़ वर्ष बाद बौद्ध धर्म अपनाया
* साम्राज्य - अफगानिस्तान से बंगाल, व नेपाल से कर्नाटक तक विस्तृत था।

* बौद्ध धर्म अपनाया :
* बौद्ध भिक्षु उपगुप्त द्वारा दीक्षा
* बौद्ध धर्म का संरक्षण प्रदान करने के कारण इसे "दूसरा-बुद्ध" भी कहते हैं।
* महेन्द्र व संघमित्रा को प्रचार हेतु श्रीलंका भेजा।
* अशोक का धम्म -
* अशोक की यह नवीन नीति धम्म थी जिसमें कोई धर्म विशेष शिक्षाएं नहीं थी, बल्कि नैतिक नियमों का एक दस्तावेज है।
* धम्म प्रचार हेतु अशोक ने 'धम्म-महामात्रों' की नियुक्ति की
* श्रेष्ठ प्रमाण : भाब्रू शिलालेख (बैराठ, जयपुर) - बुद्ध, धम्म, संघ के प्रति आस्था।
* उद्देश्य : प्रजा का नैतिक विकास * जनता को धर्म संदेश → 7वें अभिलेख में
* दूसरे स्तंभ लेख मे अशोक पूछता है - "कियं चु धम्मे" (धम्म क्या है)
* इसका जवाब दूसरे व 7वें स्तंभ लेख में देता है → पाप से मुक्ति, जन कल्याण, दया, दान, सत्य ही धम्म है
* बौद्ध यात्राएं - 10वें वर्ष बोधगया तथा 20वें वर्ष बुद्ध के जन्म स्थान लुम्बिनी की यात्रा की (रुम्मिनदेई स्तंभलेख - लुंबिनी में भूमि कर 1/4 से घटाकर 1/8 कर दिया।

SHREERAM CLASSES

अशोक के अभिलेख → टीफेन्थैलर द्वारा

* सर्वप्रथम खोज 1750 ई. मे हुई, लेकिन पढ़ने में सफलता 1837 ई. मे जेम्स प्रिंसेप ने--
* अभिलेखों की भाषा प्राकृत व लिपि - ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक व अरामाइक है। भारत मे अधिकतम ब्राह्मी लिपि के है।

वृहद शिलालेख : 14 (8 स्थानो से प्राप्ति)

1. शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा (पाक.) - खरोष्ठी लिपि
2. कालसी (देहरादून, UK)
3. गिरनार (सौराष्ट्र, गुज.) - सुदर्शन झील का इतिहास
4. सोपारा (महाराष्ट्र) - प्राचीन बंदरगाह
5. धौली (पुरी, ओड़िसा)
6. जौगढ़ (गंजाम, ओड़िशा) - न्याय प्रशा. की जानकारी
7. एर्रागुड़ी (आंध्र.

लघु शिलालेख : 14

1. कंधार (अफ.) - ग्रीक व अरामाइक लिपि
2. भाब्रु (बैराठ, जय.)
3. गुर्जरा (दतिया, mp) - देवनांप्रियपियदसि
4. अहरोरा (मिर्जापुर, UP)
5. सहगौरा (UP)
6. महास्थान (बांग्लादेश)
7. मास्की (आंध्र.) - देवनांप्रियपियदसि
8. येरागुडी (आंध्र.)
9. रजुलामंदा (आंध्र.)
10. ब्रह्मगिरि, जटिंग रामेश्वरम, सिद्धपुर (कर्नाटक)

स्तंभ शिलालेख

1. टोपरा (हरि.) - इसे फिरोज तुगलक द्वारा - दिल्ली में-
2. मेरठ (UP) - इसे भी फिरोज तुग. द्वारा - दिल्ली में..
3. प्रयाग (इलाहाबाद, UP) - रानी अभिलेख कहते हैं क्योंकि इसमें कारुवाकी का उल्लेख है।
4. साँची (रायसिन, mp) - सातवाहन राजाओं का भी उल्लेख
5. सारनाथ (वाराणसी, UP) - अशोक स्तंभ : राष्ट्रीय प्रतीक
6. रामपूर्वा (चम्पारन, BR) - वृषभ मूर्ति
7. लौरिया नंदनगढ़ (चम्पारन, BR) - सिंह की मूर्ति
8. लौरिया अरराज (चम्पारन, BR)

गुहालेख

* बराबर की पहाड़ियों मे (बोधगया, बिहार)

* अशोक के सर्वाधिक अभिलेख प्राकृत भाषा व ब्राह्मी लिपि के हैं। ब्राह्मी लिपि बांए से दांए, जबकि खरोष्ठी लिपि दांए से बांए लिखी जाती है।
* अशोक को अभिलेखों की प्रेरणा फारस के शासक डेरीयस-I (दारा-I) से मिली

मौर्य प्रशासन

* केन्द्रीय राजतंत्रात्मक व्यवस्था। सर्वप्रथम भारत की सत्ता एक सूत्र में बांधी। यहां सबसे विस्तृत नौकरशाही थी जो प्राचीन भारत में सर्वाधिक थी।

1. सीताध्यक्ष - कृषि विभाग
2. शुल्काध्यक्ष - चुंगी वसूली
3. सुराध्यक्ष - आबकारी
4. सूनाध्यक्ष - बूचड़खाना
5. संस्थाध्यक्ष - व्यापार
6. पण्याध्यक्ष - व्यापार-वाणिज्य
7. पतनाध्यक्ष - बंदरगाह
8. पोतवाध्यक्ष - मापतौल
9. अक्षशालाध्यक्ष - धातु विभाग
10. आयुधागाराध्यक्ष - हथियार
11. आकराध्यक्ष - खनन
12. मुद्राध्यक्ष - पासपोर्ट
13. नवाध्यक्ष - नौसेना
14. कुप्याध्यक्ष - जंगली उत्पाद
15. कोष्ठागाराध्यक्ष - भण्डारगृह
16. लवणाध्यक्ष - नमक
17. गणिकाध्यक्ष - वैश्या निरीक्षक

• राष्ट्रीय पक्षी : मोर

SHREERAM CLASSES

* न्याय व्यवस्था – राजा सर्वोच्च जज। धर्मस्थीय (दीवानी) व कण्टकशोधन (फौजदारी)
* गुप्तचर व्यवस्था – गूढ़ पुरुष (गुप्तचर), संस्था (एक ही स्थान पर), संचारा (भ्रमणशील)

अर्थव्यवस्था

मुद्रा

* लक्षणाध्यक्ष : टकसाल अधि.
* रूपदर्शक : मुद्रा निरीक्षक
* कार्षापण : चाँदी सिक्का
* निष्क : सोने का सिक्का
* काकणि : तांबे का छोटा सिक्का
* माषक : तांबे का बड़ा सिक्का
* मौर्यकालीन सिक्के पंचमार्क थे (ठप्पा लगाकर बनाए जाते) (S.T. रूल कमानि का पंच)

कृषि

* वार्ता : कृषि, पशुपालन, व्यापार
* क्षेत्रक : भू-स्वामी
* उपवास : काश्तकार
* भूमि के प्रकार –
  1. देवमात्रक : वर्षा पर निर्भर
  2. अदेवमात्रक : बिना वर्षा अच्छी खेती
  3. कृष्ट – जुती भूमि
  4. अकृष्ट – बिना जुती
  5. स्थल – ऊँची भूमि

कर

* सर्वप्रथम व्यवस्थित कर व्यवस्था बनी
* भू-राजस्व : 1/6
* परिहारिका : करमुक्त गांव
* अर्थशास्त्र में 21 प्रकार के करों का वर्णन।

प्रमुख कर : -

- भाग – कृषि उत्पाद कर
- सीता – सरकारी भूमि से कर
- प्रणय – आपात कर
- बलि – भू-राजस्व कर
- हिरण्य – नगद कर
- सेतुबंध – सिंचाई कर
- विष्टि – बेगार (फ्री काम)

सामाजिक व्यवस्था

अर्थशास्त्र

* समाज के 4 वर्ण थे – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
* 9 प्रकार के दास थे
* शूद्र सेना में नहीं...।
* ब्राह्मण उच्चतम, सजा कम
* अनिष्कासिनी – उच्चवर्गीय स्त्रियां
* रूपाजीवा वैश्याएं
* सतीप्रथा नहीं
* प्रवहण : सामूहिक समारोह

इंडिका

* समाज के 7 वर्ग थे – दार्शनिक, कृषक, निरीक्षक, पशुपालक, व्यापारी, सैनिक, मंत्री
* दास प्रथा नहीं थी।

* अशोक का उत्तराधिकारी दशरथ था तथा मौर्यवंश का अंतिम राजा वृहद्रथ था जिसकी हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने करके शुंग वंश की नींव रखी।

SHREERAM CLASSES

मौर्योत्तर काल

शुंग वंश (185 - 75 ई.पू.)

* संस्थापक : मौर्यों का सेनापति पुष्यमित्र शुंग (ब्राह्मणवादी) द्वारा वृहद्रथ की हत्या करके
* दरबारी विद्वान : पतंजलि (संस्कृत व्याकरण के महान पुरोहित)
* संस्कृत भाषा का पुन: उत्थान काल। * मनुस्मृति की रचना हुई।
* बौद्धों का विरोधी * हर्षचरित में पुष्यमित्र को "अनार्य" तथा निम्न कुल का बताया
* अंतिम शासक देवभूति की 75 ई.पू. में उसके सचिव वासुदेव द्वारा करके कण्व वंश की स्थापना की, यह भी ब्राह्मण वंश था। इसके अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या आन्ध्र जातीय सिमुक ने करके 30 ई.पू. को सातवाहन वंश की नींव रखी।

आन्ध्र - सातवाहन वंश (30 ई.पू. - 300 ई.)

* संस्थापक : सिमुक * इन शासकों को "दक्षिणाधिपति" कहते हैं।
* स्रोत : मत्स्य व वायु पुराण
* मूल निवास : प्रतिष्ठान नगर
* महान शासक : गौतमी पुत्र शातकर्णी (106 - 130 ई.), उपाधि : वेणकटक
* अंतिम शासक: यज्ञश्री शातकर्णी
* इन्होंने सीसे के सर्वाधिक सिक्के जारी किये। अन्य सिक्के : पोटीन, तांबे, कांसे के..।
* ब्राह्मणों को भूमिदान करने वाले प्रथम शासक सातवाहन थे।
* बंदरगाह : भड़ौच
* शातकर्णी ने अपनी माता का नाम (गौतमी) अपने नाम के आगे जोड़ा।

भारत पर विदेशी (यूनानी) आक्रमण :

* भारत पर सर्वप्रथम विदेशी आक्रमण इण्डो-ग्रीक/हिन्द-यूनानियों ने किया इनका शासक डिमैट्रियस था जिसका उत्तराधिकारी मिलिन्द/मि. मिनान्डर था जिसने बौद्ध धर्म अपनाया।
* मिनान्डर के समकालीन विद्वान नागसेन था, इनके मध्य वार्तालाप का ग्रंथ - 'मिलिन्दपन्हो' (राजा मिलिंद के प्रश्न) में है।
* भारत में सर्वप्रथम इन्होंने सोने के सिक्के जारी किए।

कुषाण वंश :

* ये मूलत: चीनी थे। इन्हे 'यूची' या तोखरी कहते हैं।
* प्रथम शासक विम कडफिसेस
* कनिष्क इनका महान शासक था, इसने 'शक संवत' चलाया (78 ई.)
* कनिष्क की दो राजधानियां थी - पेशावर व मथुरा
* इसने चौथी बौद्ध संगीति कुण्डलवन (कश्मीर) में आयोजित की (अध्यक्ष : वसुमित्र)
* राजकवि : अश्वघोष * राजवैद्य : चरक (रचना : चरकसंहिता) * विद्वान : नागार्जुन
* बौद्धधर्म की महायान शाखा को संरक्षण
* कला विकास : गांधार शैली, मथुरा शैली (बुद्ध की प्रथम मूर्ति..)

SHREERAM CLASSES

गुप्त-काल (319-550 ई॰)

* मौर्यों के पतन के बाद नष्ट हुई राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित कर लगभग सम्पूर्ण भारत को संगठित किया व विदेशी आक्रांताओं का सफलतापूर्वक सामना करके सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक तथा विज्ञान क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।
* अतः गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग (Golden-age) कहलाता है।
* संस्थापक : श्रीगुप्त (240 ई॰पू॰)
* श्रीगुप्त के बाद : घटोत्कच
* संभवतः गुप्त लोग कुषाणों के सामंत थे।

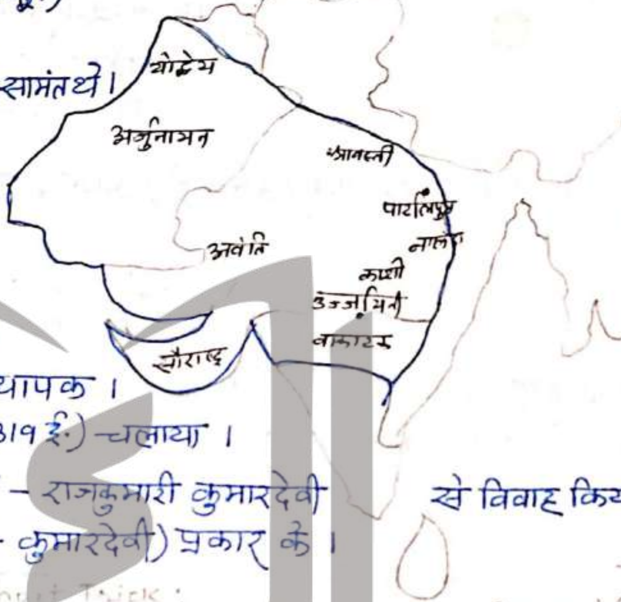

चन्द्रगुप्त-I (319-335 ई॰)

* गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक।
* 'गुप्त संवत' नामक नया संवत (319 ई॰) चलाया।
* लिच्छवियों से वैवाहिक सम्बन्ध – राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
* सिक्के - राजा-रानी (चन्द्रगुप्त - कुमारदेवी) प्रकार के।
* उपाधि - महाराजाधिराज
* चाँदी के सिक्के जारी किए।

Short Trick : चन्द्रगुप्त-I वासदि सिक्का महाराजाधिराज को दिया

समुद्रगुप्त (335-375 ई॰):

* परिचय : चन्द्रगुप्त-I का पुत्र व उत्तराधिकारी (लिच्छवी कन्या से उत्पन्न)
* उपाधि : लिच्छवाय दौहित्र, विक्रमांक
* संगीत प्रेमी - मुद्रा पर वीणा वादन
* राजधानी : पाटलिपुत्र
* सर्वाधिक साम्राज्य विस्तार
* हरिषेण - दरबारी विद्वान → 'प्रयाग प्रशस्ति' (इलाहाबाद)
  - लेखक : हरिषेण (कौशाम्बी)
  - •लिपि : ब्राह्मी •भाषा : संस्कृत •शैली : चम्पू (गद्य-पद्य)
  - युद्ध अभियान (उद्देश्य : धरणिबंध/भूमंडल बांधना)
    - ग्रहणमोक्षानुग्रह (दक्षिण के 12 राज्य जीते)
    - प्रसभोद्धरण (जड़ से उखाड़ना) (उत्तर भारत के (9) राज्यों को जीता)
  - "सौ युद्धों का विजेता"
* एरण अभिलेख (काठियावाड़, मुज॰) MP → "समुद्रगुप्त प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रुष्ट होने पर यमराज"
* विंसेंट ए॰ स्मिथ -(ब्रिटिश इतिहासकार-1848-1920) ने कहा-"भारत का नेपोलियन"

Note : नेपोलियन बोनापार्ट 1799 में फ्रांस का शासक बना - फ्रांसीसी क्रांति 1789

* उत्तराधिकारी : रामगुप्त (375-80 ई॰)

चन्द्रगुप्त -II विक्रमादित्य (380-414 ई॰) (380-412)

अन्य नाम
- देव
- देवराज
- देवश्री
- देवगुप्त

उपाधियाँ
- विक्रमादित्य
- विक्रमांक
- परमभागवत

विवाह
- कुबेरनाग (नागवंश)

पुत्री का नाम : प्रभावती गुप्ता
- विवाह : रुद्रसेन-II वाकाटक वंश का शासक (महाराष्ट्र)
- पति की मृत्यु के बाद राज्य की संरक्षिका बनी

शकों पर विजय
- सहयोग : वाकाटक वंश
- दूसरी राजधानी : उज्जैन

लौह स्तंभ
- महरौली (दिल्ली)
- कुतुबमीनार के पास
- जंगरोधी तकनीक

* चीनी यात्री - फाह्यान (399 ई॰) आया, पुस्तक - "Fu-Ko-ki"
  - बौद्ध धर्म को समझने व विनयपिटक लेने आया
  - चन्द्रगुप्त मौर्य का महल देखा व कहा इसे देवताओं ने बनाया
  - व्यापार कौड़ियों में
  - जनता सुखी है
  - अपराध कम
  - मृत्युदंड नहीं

* शिक्षा केन्द्र : पाटलिपुत्र व उज्जैन
* नवरत्नों में प्रमुख : कालीदास

रचनाएं/ग्रंथ
1. अभिज्ञान शाकुंतलम
2. रघुवंश
3. कुमारसंभव
4. मेघदूत
5. ऋतुसंहार

S.T. = कालीदास ने अभिज्ञान के दूत रघु कुमार का संहार किया

भारत का शेक्सपीयर
- ब्रिटेन का राष्ट्रीय कवि
- 16 वीं सदी का महान विद्वान

कुमारगुप्त -I (415-455 ई॰)

उपाधियाँ
- महेन्द्रादित्य
- अजीतमहेन्द्र
- अश्वमेध महेन्द्र

मयूराकृति सिक्के
- चाँदी मुद्राएं

नालंदा विश्व वि॰
- 5 वीं सदी में स्था॰
- नाम : ऑक्सफोर्ड ऑफ महान बुद्धा
- यात्रा : ह्वेनसांग
- शिक्षा : महायान शाखा
- नष्ट : 12 वीं सदी मो॰ गौरी के सेनापति बख्तियार खिलजी

सर्वा॰ अभिलेख
- कुल : 18 अभिलेख

Short : कुमार की उपाधि मे मयूर नाल अभिलेख

स्कंदगुप्त (455 - 467 ई.)

* अंतिम महान शासक
* राजधानी : अयोध्या
* हूणों का आक्रमण को असफल किया
* गुप्त पतन शुरु
* राजधानी : अयोध्या
* भानुगुप्त का एरण अभिलेख : सतीप्रथा का प्रथम उल्लेख
* स्कंदगुप्त का भितरी अभिलेख (गाजीपुर, UP)
* अंतिम गुप्त शासक : विष्णुगुप्त - 550 ई. में हूण राजा तोरमाण द्वारा पराजित

सुदर्शन-झील (सौराष्ट्र)

- निर्माण
  - चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर : पुष्यगुप्त वैश्य द्वारा सिंचाई हेतु
- बांध निर्माण
  - अशोक के समय : यवनराज तुषास्प
  - ↓ बांध का जीर्णोद्धार
    - शक महाक्षत्रप रुद्रदामन द्वारा
    - स्कंद गुप्त के समय गिरनार के प्रशासक : चक्रपालित द्वारा

गुप्तकालीन प्रशासन

प्रशासन तंत्र

राष्ट्र → सम्राट
↓ ↓
प्रशासन → गोप्ता
↓ ↓
भुक्ति (राज्य) → उपरिक
↓ ↓
विषय (जिला) → विषयपति
↓
पेठ →

राजपद

* वंशानुगत
* राजा दैविय शक्ति धारक
* राजा विष्णु का अवतार
* राष्ट्रीय चिन्ह : गरुड़

पदाधिकारी

* महाबलाधिकृत - सैन्य अधि.
* महादण्डनायक - मु. जज
* दण्डपाशिक - पुलिस अधि.
* महाअक्षपटलिक - वित्त मंत्री अभिलेख
* कुमारमात्य - सर्वोच्च अधि. (केन्द्रीय प्रांतो में)
* महाश्वपति - अश्वसेना नायक
* उपरिक - प्रांत का राज्यपाल

आर्थिक-व्यवस्था

कृषि-व्यवस्था

* मुख्य व्यवसाय : कृषि
* सिंचाई : सुदर्शन झील
* रहट/अरघट : सिंचाई हेतु पानी खींचने का यंत्र
* ध्रुवाधिकरण : भूराजस्व अधि.
* उद्रंग व भागकर : भूमि कर

भूमि के प्रकार

* क्षेत्र : कृषि योग्य
* वातु/वास्तु : निवास योग्य
* खिल : जोती न जाय (बंजर)
* अप्रहत : जंगली भूमि

व्यापार व्यवस्था

* स्वर्ण मुद्राएं : सर्वाधिक (सर्वप्रथम : हिन्द-यूनानी ने)
* ताम्रलिप्ति बंदरगाह (कलकत्ता) से विदेशी व्यापार (श्रीलंका)
* श्रेणी : व्यापारिक समूह
* श्रेष्ठि : व्यापार निगम प्रधान
* दीनार : स्वर्ण सिक्के

SHREERAM CLASSES

गुप्तकालीन समाज

* 4 वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
* दण्ड : वर्ण के आधार पर
* ह्वेनसांग : शूद्र कृषक है।
* सतीप्रथा : भानुगुप्त का एरण अभिलेख
* अन्तर्जातीय विवाह प्रचलित था
* चाण्डाल : सबसे निम्नतम
* दास प्रथा थी — नारदस्मृति : 15 प्रकार; मनुस्मृति : 9 प्रकार
* नारी की स्थिति : खराब

धार्मिक स्थिति

* ब्राह्मण धर्म - चरमोत्कर्ष
* अन्य धर्म : वैष्णव, शैव
* सिक्कों पर : लक्ष्मी व विष्णु
* सूर्य उपासना पर बल
* मंदिर निर्माण शैली शुरू : शिखर युक्त भारत का प्रथम मंदिर देवगढ़ (झांसी, MP) का दशावतार मंदिर
* गंगा व यमुना की मूर्तिकला

गुप्तकालीन कला व साहित्य

वास्तुकला

* अजंता गुफाएँ : (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)
  - कुल गुफाएं : 29
  - गुप्तकालीन : 16, 17, 19
  - नं. 16 में : मरणासन्न राजकुमारी
  - नं. 17 में : जातक कथाएं (बुद्ध के जन्म पूर्व)
* बाघ गुफाएँ (धार, MP)
  - कुल गुफाएं : 9
  - समस्त गुप्तकालीन
  - धर्मनिरपेक्ष गुफाएं

मंदिर

* देवगढ़ - दशावतार
* भूमरा - शिव
* तिगवा - विष्णु
* नचना कुठार - पार्वती — MP
* सिरपुर - लक्ष्मण
* उदयगिरि - विष्णु

साहित्य

* भाषा — संस्कृत (उच्चवर्ग); प्राकृत (निम्नवर्ग)
* मुख्य साहित्यकार : कालीदास
* विष्णुशर्मा - पंचतंत्र
* पुराण — विष्णु पुराण; वायु पुराण; ब्राह्मण पुराण

SHREERAM CLASSES

विज्ञान

आर्यभट्ट

* ग्रंथ : आर्यभट्टीयम
* पृथ्वी घूर्णन व परिक्रमण
* चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण
* पाई (π) का माप ($\frac{22}{7}$)
* त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालने का सूत्र दिया।
* शून्य व दशमलव प्रणाली

भास्कर-I

* वैदिक गणित

ब्रह्मगुप्त :

* गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त

धन्वंतरि :

* आयुर्वेद चिकित्सा

नागार्जुन

* रस चिकित्सा
  ↓
  सोने, चाँदी, तांबे धातु की भस्म से रोग निदान

पालकाप्य

* पशु चिकित्सा

गुप्तोत्तर काल

* छटी शताब्दी के मध्य गुप्त साम्राज्य विघटित हो चुका था, जिसपर कई छोटे-2 स्थानीय राज्य स्वतंत्र हुए, जो हर्षवर्धन के उदय के पूर्व तक रहे।
* इस दौरान पंजाब में हूण, कन्नौज में मौखरि, मालवा में यशोवर्मन तथा वल्लभी (गुज.) में मैत्रक वंश ने सत्ता स्थापित की।
* दक्षिण भारत में - बादामी के चालुक्य, कांची के पल्लव, मदुरा के पांड्य

वर्द्धन वंश तथा हर्षवर्द्धन :
* थानेश्वर (करनाल, हरियाणा) में इसकी स्थापना पुष्यभूति द्वारा छटी सदी में की।
* प्रभाकरनवर्द्धन इसका प्रथम स्वतंत्र शासक था। इसकी पत्नि यशोमति के दो पुत्र थे - राज्यवर्द्धन व हर्षवर्द्धन तथा एक पुत्री राज्यश्री थी।
* राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि शासक ग्रहवर्मा से हुआ
* राज्यवर्द्धन को गौड़ नरेश शशांक ने धोखे से मार डाला।
* हर्षवर्द्धन इस वंश सबसे शक्तिशाली व महान शासक हुआ (16 वर्ष में राजा बना)
* हर्ष ने कन्नौज शासक ग्रहवर्मा को मारकर साम्राज्य बढ़ाया व अपनी राजधानी थानेश्वर से हटाकर कन्नौज (UP) स्थानांतरित की।
* हर्ष का शासनकाल (606 - 647 ई.)
* हर्ष के समकालीन शासक -
  1. पुलकेशियन-II - द. भारत में चालुक्य वंशी शासक
  2. भास्कर वर्मा - कामरूप में वर्मन वंशी शासक (   )
  3. ध्रुवसेन-III - वल्लभी (गुज.) शासक। हर्ष द्वारा पराजित।
  4. शशांक - गौड़ नरेश (बंगाल)। यह कट्टर शैव था, जिसने बोधि वृक्ष (भगवान बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति) को कटवा दिया।
* ह्वेनसाँग - चीनी बौद्ध यात्री जो हर्ष के समय भारत आया, 16 वर्षों तक रहा, इसने 'सी-यू-की' नामक ग्रंथ लिखा, जिसके अनुसार हर्ष की सेना में एक लाख घोड़े थे और थानेश्वर की समृद्धि का कारण व्यापार था।
* हर्ष का दरबारी विद्वान बाणभट्ट था जिसने "हर्षचरित" व "कादंबरी" की रचना की।
* हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को संरक्षण दिया। नालंदा विश्वविद्यालय इसकी शिक्षा का मुख्य केन्द्र था। यहां कुलपति शीलभद्र था (नालंदा वि.वि. निर्माण : कुमार गुप्त-I, 5वीं सदी)
* तीन प्रकार के कर : 1. भाग (कृषि उपज का 1/10), 2. हिरण्य (नगद), 3. बलि
* हर्ष ने प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन कराया।
* प्रसिद्ध गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त हर्ष के समकालीन थे (रचना : 'ब्रह्मस्फोट सिद्धान्त')

SHREERAM CLASSES

* हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज के लिये त्रिकोणीय संघर्ष शुरू हुआ जिसमें पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट शामिल थे।

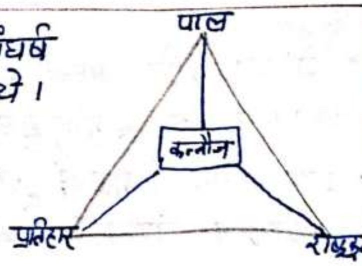

SHREERAM
CLASSES

मध्यकालीन - भारत

भारत पर अरबी आक्रमण :

* भारत पर प्रथम अरबी आक्रमण 636 ई. में खलीफा उमर ने किया जो असफल रहा।
* 712 ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने भारत पर प्रथम सफल आक्रमण किया (सिंध क्षेत्र)। अरब सागरीय क्षेत्र से हुए इस आक्रमण के समय भारत/सिंध का राजा चच और दाहिर था। इसकी जानकारी 8वीं सदी के अरबी ग्रंथ 'चचनामा' से प्राप्त...।
* अंधविश्वास - राजा चच (ब्राह्मण) का वचन था कि जब तक मंदिर पर लाल ध्वज लहराता रहेगा तबतक हमारी हार नहीं होगी। मो. बिनकासिम को इसका पता चला व उसने सबसे पहले मंदिर का ध्वज गिराया व राजा ने हार स्वीकार कर ली।
* इसे जीत कर मुस्लिम आगे नहीं बढ़ सके क्योंकि रेगिस्तानी लम्बा क्षेत्र व राजपूतों की मजबूत स्थिति थी।
* 9वीं सदी में अरबी यात्री सुलेमान ने भारत यात्रा की इस दौरान भारत/राजपूताना पर गुर्जर प्रतिहारों का शासन था व राजा मिहिरभोज-I था। सुलेमान ने भारत को काफिरों (गैर-इस्लाम) का राष्ट्र तथा मिहिरभोज को इस्लाम का शत्रु बताया।
* भारतीयों ने अंकपद्धति (1,2,3...) व शतरंज खेलना अरबों से सीखा।

भारत पर तुर्की आक्रमण

* अरबों के 300 वर्षों पश्चात भारत पर तुर्कों ने आक्रमण किया। जो गजनी (अफ.) क्षेत्र के थे।
* 977 ई. को सर्वप्रथम अलप्तगीन के पुत्र सुबुक्तगीन ने भारत पर आक्रमण किया, जो भटिंडा के हिन्दू राजा जयपाल पर हुआ। शर्मिंदगी के कारण जयपाल ने अग्नि में कूदकर आत्महत्या कर ली।
* महमूद गजनवी (998-1030 ई.)
  यह सुबुक्तगीन का पुत्र व उत्तराधिकारी था, जिसने 1000 - 1027 तक भारत पर 17 बार आक्रमण किया जिसका उद्देश्य था धन लूटना व इस्लाम का प्रसार करना।
* सबसे चर्चित आक्रमण 1025 ई. का 16वाँ व सोमनाथ मंदिर (गुजरात) पर था, इस समय गुजरात का शासक भीम-I था। मंदिर से अपार धन लूटा।
* अंतिम व 17वाँ आक्रमण 1027 ई. को सिंध के जाटों के विरुद्ध था
* 1030 ई. को महमूद गजनवी की मृत्यु...।
* गजनवी का दरबारी विद्वान अलबरूनी था जिसकी रचना - "किताब-उल-हिन्द" (तारीख-ए-हिंद) जो अरबी भाषा में है।
* अलबरूनी का मूल नाम - अबुरेहान था जो ख्वारिज्म का था।
* अलबरूनी ने दो संस्कृत पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया
  1. सांख्य (कपिल मुनि की)
  2. महाभाष्य (पतंजलि की)

मुहम्मद गौरी (1173-1206 ई.)

* इसका पूरा नाम (मूल नाम) - 'मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन साम' था। यह गौर साम्राज्य का प्रधान था जो गजनी के अधीन था।
* वंश - शंसबनी

SHREERAM CLASSES

* गौरी का प्रथम आक्रमण : 1175 ई. को मुल्तान (पाक.) पर
* 1178 ई. में आबू व अन्हिलवाड़ अभियान के तहत गुजरात शासक मूलराज को हराया
* 1178 ई. में पेशावर (पाक.) को जीतकर वहां स्यालकोट किला बनवाया (1181)
* तराइन-I युद्ध (1191 ई.) - दिल्ली-अजमेर शासक पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को हराया। तराइन हरियाणा के करनाल के समीप है।

* तराइन-II युद्ध (1192 ई.) - गोरी ने पृथ्वीराज चौहान-III को पराजित करके मुस्लिम सत्ता की नींव रखी।

* पृथ्वीराज-चौहान-III - भारत का अंतिम हिन्दू राजा कहलाता है। इसका दरबारी विद्वान चन्द्रबरदाई था जिसके ग्रंथ 'पृथ्वीराज-रासो' के अनुसार गोरी पृथ्वीराज को गोर ले गया जहां अंधा करके हत्या कर दी। * कार्यकाल : 1177-1192 ई.
* पृथ्वीराज की हार का कारण था राजपूताना व अन्य पड़ौसी राजाओं का असहयोग।
* जैसे कन्नौज शासक जयचंद गहड़वाल गोरी के पक्ष में था, क्योंकि उसकी पुत्री संयोगिता से पृथ्वीराज ने जबरन विवाह किया था। (दोनो मौसेरे भाई थे)

* ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वीराज के समय गोरी के साथ अजमेर आए जहां अपना खानकाह (मठ) स्थापित किया। यहीं अजमेर में इनकी मृत्यु हुई ( ) यहीं पर इनकी दरगाह का निर्माण इल्तुतमिश ने शुरु किया इसे पूर्ण जहांगीर ने करवाया। यह ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह कहलाती है।

* 1194 ई. को गोरी ने चन्दावर युद्ध में कन्नौज शासक जयचंद गहड़वाल को हराया।
* 1206 ई. मे गोरी की मृत्यु हुई। उसकी कोई संतान नहीं थी। वह गुलाम (दास) रखता था। कुतुबुद्दीन ऐबक उसका गुलाम था जिसने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की

* इसी दौरान गोरी के सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा वि.वि. को ध्वस्त कर दिया शिक्षकों व छात्रों का नृसंहार किया व दुर्लभ पांडुलिपियां जला दी।

दिल्ली का परिचय

* प्राचीन नाम : योगिनीपुर * महाभारत काल में नाम : इन्द्रप्रस्थ - पाण्डवों की राजधानी
* दिल्ली का संस्थापक : अनंगपाल तोमर * (8वीं सदी) दिल्ली में तोमरों का शासन 900-1200 ई.
* नामकरण - प्राचीन राजा 'दिल्लु' से संबंधित है बाद में 'दिलिका' व दिल्ली पड़ा।
* शासन : 1206 - 1526 तक सल्तनत, 1526 - 1858 मुगल, अंग्रेजों द्वारा
* यमुना पर बसा यह शहर 1911 को भारत की राजधानी बना
* क्षेत्रफल : 1484 वर्ग किमी
* दर्शनीय - राष्ट्रपति भवन, संसद, सचिवालय, लाल किला, जामा मस्जिद, कुतुबमीनार, जंतरमंतर, बिरला मंदिर, अक्षरधाम मंदिर, समाधियां, मुगल गार्डन, लोदी गार्डन, तालकटोरा गार्डन, हुमायूँ का मकबरा

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.)

राजवंश

गुलाम/मामलुक वंश (1206-1290ई.)	खिलजी वंश (1290-1320ई.)	तुगलक वंश (1320-1414ई.)	सैय्यद वंश (1414-1451ई.)	लोदी वंश (1451-1526ई.)
शासक	**शासक**	**शासक**	**शासक**	**शासक**
1. कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10)	1. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96)	1. ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-25)	1. खिज्र खाँ	1. बहलोल लोदी (1451-89)
2. इल्तुतमिश (1210-36)	2. अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)	2. मो. बिन तुगलक (1325-51)		2. सिकंदर लोदी (1489-1517)
3. रजिया (1236-40)	3. कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316-20)	3. फिरोजशाह तुगलक (1351-88)		3. इब्राहिम लोदी (1517-1526)
4. मुइज्जुद्दीन बहरामशाह (1240-42)	4. नासिरुद्दीन खुसरव शाह (खुसरो शाह) (1320)	4. नासिरुद्दीन महमूद		
5. अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)				
6. नासिरुद्दीन महमूद (1246-65)				
7. बलबन (1265-87)				
8. कैकुबाद मोइज्जुद्दीन (1287-90)				

गुलाम/मामलुक वंश (1206-1290):

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10):

- मामलुक - शब्द का अर्थ - 'स्वतंत्र माता-पिता से उत्पन्न दास'
- ऐबक - शब्द का अर्थ - 'चँद्रमा का स्वामी'।
- संस्थापक - भारत में तुर्की
- राजधानी - लाहौर
- निर्माण - कुतुबमीनार (दिल्ली), 'कुवत-उल-इस्लाम' मस्जिद (दिल्ली), ढाई दिन झोंपड़ा (अज.) (संस्कृत विद्यालय था - विग्रहराज IV द्वारा निर्मित)
- लाखबख्श - लाखों का दान करने, न्यायप्रिय, उदारता व दानी होने के कारण…।
- मृत्यु - पोलो खेलते हुए घोड़े से गिरकर।
- ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण सूफी संत शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की याद मे बनवाई जिसे इल्तुतमिश ने पूरा किया

S.T. = ऐबक मा से लाख बार 'निरास' हुआ

SHREERAM CLASSES

इल्तुतमिश (1211 - 1236 ई.) :

- इल्तुतमिश - ऐबक का गुलाम व दामाद, शम्सी वंश का संस्थापक व इल्बरी जाति का तुर्क । जन्मस्थान - तुर्किस्थान ।
- राजधानी - सर्वप्रथम लाहौर से हटाकर दिल्ली को...। अत: वास्तविक संस्थापक...।
- चालीसा - 40 गुलाम सरदारों के गुट के संगठन की स्थापना की - "तुर्कान-ए-चहलगानी"
- इक्ता प्रणाली - भू राजस्व की नवीन पद्धति, जिसमे तुर्क सरदारों को भूमि आवंटित करके राजस्व वसूली व प्रशानिक अधिकार दिए ।
- शुद्ध अरबी सिक्के - जीतल (ताँबा) व टंका (चाँदी) S.T. = "जूते का चांटा"
- मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता - भारत में गुम्बदाकार मकबरे शुरु...। दिल्ली मे स्वंय का मकबरा बनवाया, जो स्क्विंच शैली ( ) मे बना भारत का प्रथम मकबरा है।
- तराइन-III युद्ध (1215 ई.) मे गजनी के सुल्तान ताजुद्दीन यल्दोज को हराया।
- मंगोल आक्रमण टाला (1221 ई.) - मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ ख्वारिज्म के शाह जलालुद्दीन मंगबर्नी का पीछा करते हुए सिंधु नदी तक आ गया। मंगबर्नी ने इल्तुतमिश से शरण माँगी, लेकिन लेकिन मंगोलो के डर के कारण शरण नही दी।
- रणथंभौर विजय (1226 ई.) - चौहानों से जीत
- कुतुबमीनार पूर्ण - ऐबक द्वारा शुरु इमारत को पूर्ण किया।
- मिन्हास-उस-सिराज - दरबारी विद्वान - ग्रंथ : 'तबकात-ए-नासिरी'
- मृत्यु - 1236 ई. को बामियान युद्ध अभियान मे रोगग्रस्त होकर...। मकबरा : दिल्ली

S.T. "इल्तुतमिश चराई मे अरबी सिक्के और तराइन मे मंगोलो को कुते मिली देना"

रजिया सुल्तान (1236-40):

- पुत्री - इल्तुतमिश की पुत्री व उत्तराधिकारी, भारत की प्रथम महिला शासिका बनी।
- पर्दात्याग दिया और पुरूषों के समान कोट व कुलाह (टोपी) पहनकर दरबार मे....।
- विरोधी - चालीसा दल के अमीर
- अल्तूनिया द्वारा विद्रोह - 1240 ई. में विद्रोह दबाने हेतु तबरहिंद (भटिंडा) प्रस्थान किया। रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर लिया। हालांकि वह याकूत से प्यार करती थी।
- हत्या - तबरहिंद से आते समय 13 अक्टू. 1240 को कैथल (हरियाणा) मे डाकुओं द्वारा।
- असफलता का कारण - 1. महिला होना, 2. पूरा शासन अपने नियंत्रण में रखना, 3. सरदारों की महत्वाकांक्षा, 4. याकूत से मोहब्बत ।

बहरामशाह (1240-42)

- रजिया का भाई • इसके समय 1241 को लाहौर पर मंगोल आक्रमण हुए।
- बलबन को हांसी व रेवाड़ी का जागीरदार बनाया • तुर्क सरदारों द्वारा हत्या

अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)

- इल्तुतमिश का पौत्र व रुकनुद्दीन फिरोज का पुत्र • शक्तियाँ चालीसा दल को सौंपी।

नासिरुद्दीन महमूद (1246-65)

- इल्तुतमिश का पुत्र • बलबन के सहयोग से सुल्तान बना • अत्यंत सीधा - अत: 'दरवेश राजा' • टोपियां सीता

बलबन (1265-87):

- पूरा नाम - बहाउद्दीन बलबन • चालीसा दल का सदस्य
- राजत्व सिद्धान्त - सुल्तान का पद ईश्वर द्वारा प्रदत्त है जिसका निरंकुश होना जरूरी है पृथ्वी पर 'ईश्वर का प्रतिनिधि' (नियामत-ए-खुदाई) होता है। अर्द्ध-दैवीय सिद्धांत। राजा को शक्ति ईश्वर से प्राप्त होती है अतः उसके कार्यों की जाँच नहीं हो सकती
- चालीसा का दमन - इल्तुतमिश द्वारा गठित 'तुर्कान-ए-चहलगानी' को समाप्त...। 'लौह-रक्त की नीति' अपनाई (शक्ति व न्याय)
- दरबार में गंभीरता - बलबन दरबार में न हंसता न मुस्कुराता न किसी को ऐसा करने की इजाजत। 'सिजदा' (झुकना) व 'पैबोस' (पैर-चूमना) जैसी ईरानी परम्पराएं लागू
- "जिल्ल-ए-इलाही" - यानि 'ईश्वर का प्रतिबिम्ब', यह बलबन की उपाधि थी।
- दरबारी कवि - अमीरखुसरो व अमीर हसन देहलवी (इसे गजल लेखक के कारण "भारत का सादी" कहते हैं। सादी = फारसी कवि।)
- मेवातियों का दमन - लूटमार रोकने के लिए दमन किया व गोपालपुर मे दुर्ग बनवाया।
- मंगोल आक्रमण - (1285) इस दौरान बलबन का बड़ा पुत्र मुहम्मद खाँ मारा गया, तब बलबन टूट गया, एकांत मे फूट-फूट कर रोता था
- मृत्यु के बाद बलबन का पौत्र व बुगरा खाँ का पुत्र **कैकुबाद** उत्तराधिकारी सुल्तान बना, लेकिन कैकुबाद के लकवा हो जाने पर उसके नाबालिग पुत्र शम्सुद्दीन क्यूमर्स को सुल्तान बनाया व जलालुद्दीन खिलजी को उसका संरक्षक नियुक्त की, मौका पाकर 1290 में शम्सुद्दीन क्यूमर्स की हत्या करके खिलजी वंश की स्थापना कर दी।

खिलजी-वंश (1290-1320 ई.)

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96)

- खिलजी क्रांति - सत्ता पर तुर्की कुलीनता की परम्परा समाप्त हो जाना व प्रशासन मे व्यापक स्थानीय भागीदारी शुरु।
- गैर-तुर्क - थे मूलतः अफगानिस्तान के थे।
- संस्थापक - खिलजी वंश
- उदार शासक - चंगेज खाँ के नाती उलुग खाँ ने अपने 4000 मंगोल समर्थकों के साथ इस्लाम धर्म अपनाया व भारत में रहने लगे जो नवीन मुसलमान कहलाए। फिरोज खिलजी ने अपनी पुत्री की शादी उलुग खाँ से की। नवीन मुसलमाने के रहने हेतु मुगलपुर नामक बस्ती बसाई।
- द. भारत पर प्रथम आक्रमण - देवगिरि (कर्ना.) के रामचंद्रदेव को हराया (1294)
- रणथंभौर पर असफल आक्रमण - चौहान शासक हम्मीरदेव के समय (1290) असफल होने पर कहा "मैं ऐसे 100 किलों को मुसलमान की दाढ़ी के बाल समान भी नहीं मानता

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) :

- अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके "अबुल मुजफ्फर सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद शाह खिलजी" के नाम से शासक बना। (नाम : अली गुरशास्प)
- लालमहल मे अलाउद्दीन खिलजी का राज्याभिषेक हुआ, यह बलबन का महल था।
- उपाधि - सिकंदर - सानी

सर्वाधिक मंगोल आक्रमण (7-बार)

- 1296 से 1308 तक 7 बार
  - राजधानी : सीरी (उ.प. सीमा) (1304 ई.)
- स्थायी सेना
  - नगदवेतन : 234 टंका प्रतिवर्ष
  - हुलिया व दाग प्रथा : सैनिकों व घोड़ों का रिकार्ड
- आरिज-ए-मामालिक : सेना भर्ती विभाग प्रमुख

बाजार नियंत्रण प्रणाली

- उद्देश्य : सेना को नियंत्रित कीमत पर वस्तुएं
- सराय-ए-अदल (न्याय का स्थान)
- शहना-ए-मण्डी : माप तौल निरीक्षण
  - गंभीर अधिकारी देउ

अलाउद्दीन खिलजी की विजयें

उत्तर भारत विजयें

- 1301 : रणथंभौर के दुर्ग को जीता हम्मीर देव चौहान को हराया (13 जुलाई, 1301 राज. का प्रथम साका)
- 1303 : चित्तौड़गढ़ - रतनसिंह पद्मिनी (खिज्राबाद) राज. का दूसरा साका
  - ग्रंथ : पदमावत (मलिक मो. जायसी)
  - ग्रंथ : खजाइन-उल-फ्तूह (अमीर खुसरो)

दक्षिण भारत विजयें

- देवगिरि (कर्ना.) - रामचंद्रदेव पराजित
- 1308 तेलंगाना - रुद्रप्रतापदेव-II को मलिक काफूर ने पराजित किया व कोहिनूर हीरा प्राप्त किया

Note : मलिक काफूर (हींजड़ा) को AK ने गुजरात अभियान के समय 1000 दीनार मे खरीदा था अतः इसे - "हजार दीनारी"...

- दो नए कर लगाए
  - घरई (मकान/घर कर)
  - चरई (चारागाह कर)
- मंत्रिपरिषद : दीवान-ए-वजारत : वजीर (मुख्यमंत्री)
  - दीवान-ए-आरिज : सैन्य मंत्री
  - दीवान-ए-इंसा : शाही आदेशों का पालन करवाने वाला
  - दीवान-ए-रसातल : विदेश विभाग

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-20)

खुसरव शाह (1320)

SHREERAM CLASSES

तुगलक वंश (1320-1414)

ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-'25)

* खुसरवशाह को मारकर इसने तुगलक वँश की नींव रखी। इससे पूर्व यह दीपालपुर (पँजाब) का गवर्नर था
* यह हिन्दू (जाट) महिला का पुत्र था।
* गाजी की उपाधि धारण करने के कारण इसे गाजी मलिक भी कहते हैं। "गाजी" का अर्थ काफिरों का वध करने वाला। मंगोल विजय के बाद।
* नहरें - दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान जिसने नहर निर्माण शुरु किया।
* "हनूज-ए-दिल्ली दूरस्थ" (दिल्ली अभी दूर है) - यह वाक्य ग्यासुद्दीन को चिश्ती संत निजामुद्दीन औलिया ने उस समय कहा, जब ग्यासुद्दीन बंगाल अभियान से आ रहा था तथा संदेश भिजवाया कि औलिया से कहो दिल्ली छोड़कर चला जाए। क्योंकि दोनो में संबंध कटुतापूर्ण थे।

मोहम्मद बिन तुगलक (1325-51):

• परिचय - ग्यासुद्दीन का पुत्र; मूलनाम: जौना खाँ, उपाधि: उलूग खाँ
* विद्वान - दिल्ली सुल्तानों मे सर्वाधिक विद्वान, लेकिन सर्वाधिक विवादित पागल सुल्तान

सर्वाधिक

- सर्वाधिक विद्वान व सर्वा. विवादित
- सल्तनत में सर्वाधिक प्रांत (23)
- मुस्लिम संस्कृति का द. भारत मे सर्वा. प्रसार
- सर्वाधिक विद्रोह (34)
- सर्वाधिक (होली, दशहरा) हिन्दू त्यौंहारों में रुचि

सर्वाधिक 5- असफल योजनाएँ

1. राजधानी परिवर्तन (1327)
* 1327: दिल्ली से हटाकर देवगिरि (MH) को बनाया व नाम दौलताबाद रखा।
* लोग रह नहीं पाए, खर्च से राजकोष खाली...।

2. सांकेतिक मुद्रा (1321)
* चाँदी की कमी के कारण तांबे के सिक्के का मूल्य चाँदी के बराबर
* यह चीन के मंगोल शासक कुबलई खां के कागजी मुद्रा से तुलनार्थ
* लोगों ने नकली सिक्के बनाए।

3. खुरासान अभियान (1332)
* अफगानिस्तान क्षेत्र
* 5 लाख सैनिक भर्ती करके उन्हे एक वर्ष का वेतन एडवांस दिया
* योजना बीच मे ही भंग हो गई।

4. कराचिल अभि. (1334)
* कुल्लू व कांगड़ा क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्र
* जीतने हेतु तीन लाख सेना भेजी, बर्फीले तूफान मे मृत्यु
* 10 सैनिक वापस आए.. उन्हे फांसी दे दी

5. दोआब मे कर वृद्धि
* रिक्त राजकोष की भरपाई हेतु
* विद्रोह...
* कर नही मिला..

* मृत्यु - 20 मार्च 1351 को बिमारी के कारण मृत्यु। इसकी मृत्यु पर अब्दुल कादिर बदायूंनी ने कहा - "प्रजा को सुल्तान से व सुल्तान को प्रजा से मुक्ति मिल गई।"
* इब्नबतूता - मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री, इसे सुल्तान ने दिल्ली का काजी नियुक्त किया, बाद मे मनमुटाव के कारण जेल में डाल दिया। इसने "रेहला" नामक पुस्तक लिखी।
* दीवान-ए-अमीर कोही नामक नया कृषि विभाग बनाया। * कृषि पर लगान 1/2 किया।
* सिक्कों पर अंकन - अपने पिता ग्यासुद्दीन व मिस्र के खलीफा का नाम..।
* विजयनगर साम्राज्य - 1336 ई. हरिहर व बुक्का भाइयों ने मिलकर स्था. की।

फिरोजशाह तुगलक (1351-88) :

* परिचय - MBT का चचेरा भाई, पिता : रज्जब तथा माता आबोहर के राजपूत शासक (भाटी) रणमल भाटी की पुत्री (बीबी जैला) थी।
* सल्तनत युग का अकबर - (एलफिंसटन ने कहा) - क्योंकि यह अकबर के समान एक कल्याणकारी निरंकुश शासक था - लोगों के तकावी (ऋण) माफ किए, असहायों व अनाथों की सहायता, गरीब मुस्लिम लड़कियों की शादी करवाना, जनता पर लगे 24 प्रकार के कष्टदायी कर समाप्त किए, दिल्ली के निकट "दारूल शफा" नामक अस्पताल खुलवाया, सर्वाधिक नहरों का निर्माण इत्यादि कल्याणकारी कार्य किए।
* दीवान-ए-बन्दगान - नामक दासों का विभाग बनाया जिसमे 1,80,000 दासों को प्रशिक्षण दिया जाता। दासों का शौकीन था
* दीवान-ए-खैरात - नामक विभाग गरीबों, असहायों, अनाथों आदि के हितों की रक्षा करता
* कुतुबमीनार मे दो नई मंजिलें - ऐबक ने नींव रखी इल्तुतमिश ने पूर्ण किया। चौथी व अंतिम मंजिल क्षतिग्रस्त हुई जिसे हटाकर दो नई मंजिलें (चौथी व पांचवी) बनवाई। अब यह गोलाकार इमारत 5-मंजिला है।
* दो अशोक स्तंभ - एक मेरठ (UP) व एक टोपरा (पंजाब) से उठाकर दिल्ली मे गड़वाया
* दो नवीन सिक्के - "अद्धा" (1/2 चाँदी + 1/2 तांबा) व "बिख" (1/4 चाँदी + 1/4 तांबा + पीतल) सिक्के
* केवल 4 प्रकार के कर
  1. जजिया (गैर-मुस्लिम)
  2. जकात (मुस्लिम)
  3. खराज (गैर-मुस्लिमों का भूमिकर)
  4. खुम्स (लूट माल का हिस्सा 1/5)
* हर्ब-ए-शर्ब - (हक-ए-शर्ब) नामक नया सिंचाई कर (1/10)
* नगरों की स्थापना - जौनपुर (UP), हिसार (HR), फतेहाबाद (HR), फिरोजपुर (PB) तथा फिरोजशाह कोटला (दिल्ली) Trick: "फिरोज के कोट मे जौन फते का हिसा"
* पुस्तकें -
  1. फुतुहात-ए-फिरोजशाही - फिरोजशाह की आत्मकथा
  2. तारीख-ए-फिरोजशाही - जियाउद्दीन बरनी द्वारा फारसी में

अंतिम शासक नासिरुद्दीन महमूद के समय 1398 को भारत पर मंगोल शासक तैमूर लंग का भयकर आक्रमण हुआ। इसके बाद सैय्यद वंश की स्था. हुई।

सैय्यद वंश (1414-51)

खिज्र खाँ (1414-21) - सैय्यद वंश का संस्थापक

मुबारक शाह (1421-34) -

मुहम्मद शाह (1434-45)

आलमशाह (1445-51)

SHREERAM CLASSES

लोदी-वंश (1451 - 1526)

बहलोल लोदी (1451-89)

* दिल्ली सल्तनत में यह प्रथम अफगानी वंश था, इसका संस्थापक बहलोल था।
* इससे पूर्व यह सरहिन्द (पंजाब) का गवर्नर था।
* समानों में प्रथम सिद्धांत अपनाया। वह अपने सरदारों के सामने सिंहासन पर नहीं बैठता, स्वयं को उनके समान मानता।
* वह अपने सरदारों को "मकसदे आलो" कहकर पुकारता।
* जौनपुर पर नियंत्रण - जौनपुर शासक हुसैनशाह को पराजित करके दिल्ली में मिलाया

सिकंदर लोदी (1489-1517)

* बहलोल का पुत्र व उत्तराधिकारी । * मूलनाम : निजाम खाँ * उपाधि: सिकंदर
* उपनाम : गुलरुखी । इसी नाम से वह फारसी में कविताएँ लिखता।
* आगरा की स्था. - 1504 ई. में यमुना तट पर आगरा बसाकर अपनी राजधानी बनाई।
* 'लज्जते सिकंदरी' - सिकंदर कालीन संगीत की पुस्तक रचना हुई। सिकंदर शहनाई बजने पर झूमने लगता।
* 'गज-ए-सिकंदरी' - नाप का नया पैमाना (30 इंच)
* फरहंद-ए-सिकंदरी - सिकंदर द्वारा रचित फारसी में आयुर्वेद की पुस्तक।
* असहिष्णु शासक - ब्राह्मणों पर पुनः जजिया लगाना शुरु किया। उसने एक ब्राह्मण को इसलिये फाँसी दी क्योंकि उसने कहा हिन्दू व मुस्लिम धर्म समान रूप से पवित्र हैं।
* सिकंदर दाढ़ी नहीं रखता था।

इब्राहिम लोदी (1517-1526):

* परिचय : सिकंदर लोदी का पुत्र व उत्तराधिकारी। सल्तनत का अंतिम शासक।
* खातौली युद्ध (1518) (कोटा) में राणा साँगा से हारा।
* बाड़ी युद्ध (1519) (धौलपुर) में राणा साँगा से हारा।
* दौलत खाँ लोदी - अफगान सरदार व पंजाब का सूबेदार था उसने इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ से मिलकर काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया। दौलत खाँ पंजाब का स्वतंत्र शासक बनना चाहता था
* पानीपत-I युद्ध - 21 अप्रेल, 1526 - इब्राहिम लोदी को बाबर ने हराकर मुगल वंश की नींव रखी।

SHREERAM CLASSES

महत्वपूर्ण तथ्य

* **अमीर खुसरो** : हिन्दी व फारसी भाषाओं का विख्यात इस विद्वान का जन्म 1253 ई. को एटा (UP) के पटीयाली गांव में हुआ। * पूरा नाम : 'अबुलहसन यमिनुद्दीन खुसरो'
* उसने खड़ी बोली के विकास में अहम योगदान दिया
* उसने दिल्ली के 9 सुल्तानो को सेवाएं दी - बलबन से मो. बिन तुगलक तक।
* मृत्यु : 1325 ई. को मो. बिन तुगलक के समय
* अमीर खुसरो ने फारसी काव्य शैली - "सबक-ए-हिन्दी"/हिन्दुस्तानी शैली को जन्म दिया वह स्वयं को "तोता-ए-हिन्द" कहता था। * उसने कहा "हिन्दी फारसी से कम नहीं है।"
* वह पहला मुसलमान था जिसने भारतीय होने का दावा किया।
* उसने ईरानी तम्बुरे व भारतीय वीणा को मिलाकर "सितार" का आविष्कार किया।

जौनपुर - सल्तनत का प्रथम राज्य जिसने फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद स्वतंत्रता का बिगुल बजाया, जिसका स्वतंत्र प्रथम शासक मलिक हुसैनशाह सरवर था। जौनपुर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक इब्राहिमशाह शर्की था जिसने "शिराज-ए-हिन्द" की उपाधि धारण की। इनके शासनकाल में जौनपुर का शैक्षणिक विकास हुआ अतः जौनपुर को "पूर्व का शिराज" कहा जाने लगा।
* शर्की वंश का अंतिम शासक हुसैनशाह शर्की था जिसने बहलोल लोदी से संधि कर ली।

कश्मीर - 13वीं सदी में कश्मीर एक स्वतंत्र राज्य था, यहां हिन्दू शाही वंश का शासन था।
* 14वीं सदी में यहां सिकंदरशाह का शासन था इसी दौरान (1398) तैमूरलंग ने भारत पर आक्रमण किया। सिकंदरशाह धार्मिक कट्टर था, उसने मार्तंड मंदिर का विनाश किया अतः उसे बुतशिकन कहते हैं।
* कश्मीर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक जैनुल आबिदीन (सिकंदरशाह का भाई) था जिसे धार्मिक सहिष्णुता के कारण कश्मीर का अकबर कहा जाता है। उसने महाभारत तथा राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद करवाया।

SHREERAM
CLASSES

भक्ति आन्दोलन

* भक्ति - यह शब्द 'भज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- सेवा या समर्पण भावना। वास्तव में ईश्वर के चरणों में पूर्णरूप से आत्मसमर्पण करना व अनुरक्त होना ही भक्ति है।
* शुरुआत - 700-1200 ई. के मध्य इसकी शुरुआत दक्षिण भारत में हुई।
* उद्देश्य - सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना, समाज में समन्वय व समानता लाना
* प्रतिपादक - **शंकराचार्य**, जिनका जन्म 788 ई. को कालदी ग्राम (केरल) में हुआ, इनके पिता- शिवगुरु व माता आर्यम्बा (नम्बूदरी ब्राह्मण) थे।
* शंकराचार्य बौद्ध धर्म के 'शून्यवाद' से प्रभावित होने के कारण इन्हें प्रच्छन्न बौद्ध कहते हैं।
* शंकराचार्य ने ज्ञान मार्ग के अंतर्गत निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया उन्होंने अद्वैतवादी दर्शन का प्रतिपादन किया, जिसका अर्थ है "जो दो न हो" (अद्वैतवाद = केवल एक ब्रह्म)
* उन्होंने स्मृति संप्रदाय की स्थापना की
* शंकराचार्य का दर्शन "अद्वैतवाद" तथा उपासना 'निर्गुण भक्ति' थी।

शंकराचार्य के विरोध मे स्थापित दर्शन/मत - "सगुण भक्ति"

क्र.सं.	प्रतिपादक	दर्शन/मत	संप्रदाय	विवरण
1.	रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद (निराकार)	श्रीसंप्रदाय	12 वीं सदी
2.	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद (दोनों पक्ष)	सनक संप्रदाय	12 वीं सदी
3.	माधवाचार्य	द्वैतवाद (इंसान देवता हो सकता है)	ब्रह्म संप्रदाय	13 वीं सदी
4.	वल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैतवाद/पुष्टि मार्ग (प्रेम भाव)	रुद्र संप्रदाय	15 वीं सदी
5.	चैतन्य महाप्रभु	अचिंत्य भेदाभेद	मध्यगौडियसंप्र.	16 वीं सदी

प्रारंभ- **नयनार** - (63 शैव संत) तथा **आलवार** (12 वैष्णव संत) संतों द्वारा द. भारत से भक्ति आंदो. शुरु

रामानुजाचार्य

* जन्म: 12 वीं सदी - त्रिपुती (तमिलनाडु) में
* पिता: केशव * माता: कांतिमति (द्रविड़ ब्राह्मण)
* शंकराचार्य मत के अनुयायी थे, लेकिन बाद में शंकराचार्य के विचारों से मतभेद हो गया
* वे सगुण भक्ति व वैष्णव धर्म के अनुयायी थे, लेकिन उस दौरान वहां चोल शासक कुलोतुंग-II शैव धर्म अनुयायी था जो वैष्णव विरोधी था। कुलोतुंग ने विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फिंकवा दिया व रामानुज को राज्य से निकाल दिया। बाद मे उस विष्णु मूर्ति को समुद्र से निकाल कर तिरुपति मे स्थापित किया, जहां आज तिरुपति बालाजी मंदिर है (आंध्र.)
* रामानुज ने विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया व शूद्र जाति के लोगों को अपना शिष्य बनाया।

माधवाचार्य - 13 वीं सदी

* जन्म: कन्नड़ ब्राह्मण परिवार में
* भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत
* द्वैतवाद दर्शन के प्रतिपादक
* ब्रह्मसंप्रदाय के संस्थापक